रामायण

से सीखें मैनेजमेंट

BIYANI
GROUP OF COLLEGES, JAIPUR
Where you can trust
FASTEST Growing Residential Group of Colleges in Rajasthan

Dr. Sanjay Biyani
Director (Acad.)
Biyani Group of Colleges
www.sanjaybiyani.com

सम्पादकीय

प्रिय पाठक,

पाठ्य सामग्री तैयार करने के पीछे मेरा मकसद यह था कि रामायण में वर्णित मर्यादा पुरुषोत्तम राम व उनके परिवार के वास्तविक जीवन दर्शन को वर्तमान एवं मैनेजमेंट संदर्भ में आपके समक्ष प्रस्तुत करना।

आज हमारे समाज में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपने परिजनों, मित्रों व ऑफिस में कार्य कर रहे साथियों से आपसी रिलेशन को किस प्रकार रखते हैं। प्रस्तुत पाठ्य सामग्री मर्यादा पुरुषोत्तम राम व उनके परिजनों के बीच आपसी संबंध का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करती है। मेरा यह विश्वास है कि यह अध्ययन सामग्री आपको, परिजनों, मित्रों व ऑफिस में कार्य कर रहे साथियों के साथ बेहतर रिश्ते (रिलेशनशिप) बनाने में मदद करेगी। साथ ही साथ यह अध्ययन सामग्री आपको मनोविज्ञान की समझ व सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करेगी। आशा है कि आप इस अध्ययन सामग्री के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करवाएंगे।

सधन्यवाद!

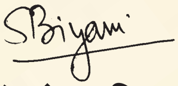

डॉ. संजय बियानी
निदेशक
www.sanjaybiyani.com

ISBN : 978-93-83462-85-8

डॉ. संजय बियानी

जन्म : 06 अगस्त, 1970

शिक्षा : चार्टर्ड अकाउंटेंट, एम.बी.ए., एल.एल.बी., एल.एल.एम., पी-एच.डी., पी.जी. डिप्लोमा इन साइकोलॉजी, पी.जी. डिप्लोमा इन योग एंड थैरेपी।

दस मोटिवेशनल पुस्तकों का लेखन। जिनमें से स्वयं की खोज, पॉजीटिविटी से मस्तिष्क को शक्तिशाली कैसे बनाएँ, श्रीमद्भगवद्गीता... संजय की नजर से, अष्टावक्र गीता से परमात्मा को जानें... संजय की नजर से, द काउंसलर प्रमुख हैं। अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों और पुरस्कारों से विभूषित। लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर, यू-ट्यूबर व काउंसलर के रूप में विख्यात। उनका मानना है कि जीवन में सफलता का मूल मंत्र उत्साह व सकारात्मक सोच है। बियानी ग्रुप ऑफ कॉलेजेज के अंतर्गत 15 कॉलेजों के निदेशक। इनमें आधारभूत शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

1. मर्यादित व्यवहार (Dignified Behavior)

महर्षि वाल्मिकी बताते हैं कि पुत्र प्राप्ति के लिए कामेष्ठि यज्ञ करवाना होगा। तब महारानी कैकयी कहती हैं कि गुरूदेव फिर विलंब क्यों? तब महर्षि वशिष्ठ कहते हैं कि इस यज्ञ को कराने के लिए महर्षि श्रृंग मुनि को बुलाना पड़ेगा। तब माता कैकयी कहती हैं कि मैं आर्य सुमंत्र को कहती हूं कि वह सेना तैयार करे। तब महर्षि वशिष्ठ कहते हैं ''एक योगी के पास आप कुछ मांगने जा रहे हो, पराक्रम या बल दिखाने नहीं। देवी, भिक्षा खाली झोले में ही डाली जाती है। एक महात्मा के पास अपना वैभव दिखाने जाओगे तो सोने-चाँदी की चमक व अहंकार ही लेकर आओगे।'' तब राजा दशरथ कहते ''ऋषि के पास मैं राजा दशरथ नहीं अपितु भिक्षु दशरथ बनकर जाऊंगा।'' इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमेशा मर्यादित व्यवहार किया जाना चाहिए।

2. राम अवतार का कारण (Significance of Lord Ram's Incarnation)

माँ लक्ष्मी भगवान विष्णु को बता रही हैं कि प्रभु आपकी सृष्टि का भार धारण करना मेरा धर्म है। जब धर्म की जगह अधर्म का राज होता है तब अधर्म से अनाचार बढ़ता है, फिर अनाचार से भ्रष्टाचार बढ़ता है और भ्रष्टाचार से अत्याचार की ज्वाला भड़क उठती है। इस दृश्य में भगवान विष्णु मन ही मन ठान लेते हैं कि जिन मानवों व वानरों को रावण जैसा पापी तुच्छ समझता है वे उसी काल में अवतार के रूप में जन्म लेंगे। आज हमारे समाज की सबसे बड़ी समस्या भ्रष्टाचार ही तो है और भ्रष्टाचार के कारण ही अनाचार व अत्याचार बढ़ने लगे हैं। इन सबका मूल अधर्म ही तो है। हमें अपने जीवन में धर्म यानी कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

3. गुरूकुल शिक्षा प्रणाली (Gurukul Education System)

राजा दशरथ अपने चारों पुत्रों को बता रहे होते हैं कि गुरू की हमेशा सेवा करना, उनका ध्यान रखना। तब उन्हें श्रीराम पूछते हैं कि ''पिताश्री गुरू की सेवा कैसे करेंगे?'' तब राजा दशरथ कहते हैं कि उनके सोने के बाद सोना, उनके जागने से पहले जागना। गुरू आश्रम की सफाई का पूर्ण तरह से ध्यान रखना। यज्ञ और हवन करने के लिए वन से समि धा लाना। अंत में राजा दशरथ कहते हैं गुरू और शिष्य के बीच विश्वास व प्रेम का संबंध होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा प्रणाली अर्थ पर आधारित हो गई है। जबकि गुरू वशिष्ठ की शिक्षा में श्रद्धा व विश्वास का भाव था। इसी कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य व संस्कारों का अभाव हो गया है एवं पैसा कमाना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य हो गया है।

4. बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कड़ा अनुशासन व भावनाओं की मिठास भी आवश्यक है (Discipline and affection go hand in hand for all-round development of children)

गुरु माता अरुंधति अयोध्या से आए हुए सभी राजकुमारों गुरुकुल के अन्य विद्यार्थियों को लोरी सुना कर सुलाती है। इस पर गुरु विश्वामित्र उन्हें कहते हैं ''यह ब्रह्मचारी हमारे शिष्य है इन पर अपने मोह का जाल ना डाला जाए।'' इस पर गुरु माता अरुंधति कहती हैं कि ''मैं एक मां का कर्त्तव्य व प्रेम निभा रही हूं।'' इस पर महर्षि विश्वामित्र कहते हैं कि ''मैं इन्हें वीर पुरुष बनाना चाहता हूं जो आगे जाकर इस पूरी धरती की रक्षा कर सकें, वह यह भी कहते हैं कि मैं इन्हें कर्मठ बनाना चाहता हूं।'' इस पर गुरु माता कहती हैं कि ''इन्हें कर्मठ बनाइए परंतु पत्थर नहीं, भावना की कोमलता भी रहने दीजिए।'' इस पर गुरुदेव अपनी सहमति देकर कहते हैं कि ''मैं इन्हें कर्त्तव्य की कठोरता सिखाऊंगा और आप भावनाओं की कोमलता।'' इससे हमें यह सीख मिलती है कि बच्चों के समग्र विकास के लिए पिता के कड़े अनुशासन व मां की भावनाओं की कोमलता दोनों ही आवश्यक होते हैं।

5. मनुष्य का शरीर सर्वोत्तम है। (The human body is supreme)

गुरुदेव वशिष्ठ राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न एवं गुरुकुल में अन्य शिष्यों से कहते हैं कि ''प्रकृति में बहुत से शरीर होते हैं जानवरों के, पक्षियों के एवं जलचर के परंतु संसार में सबसे दुर्लभ व उत्तम शरीर मनुष्य का होता है। वे मनुष्य की शरीर को सर्वोत्तम इसलिए मानते हैं क्योंकि इसके अंदर वह आध्यात्मिक शक्ति है जो किसी दूसरे शरीर में नहीं। वह यह भी बताते हैं कि आध्यात्मिक शक्ति और मानसिक शक्ति का भंडार हर मनुष्य के शरीर में होता है। प्रकृति उसमें भेदभाव नहीं करती। इसी कारण हर मानव शरीर को मुक्ति का द्वार कहा जाता है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हर मनुष्य का जीवन अनमोल है। ईश्वर ने सिर्फ इंसान को ही यह क्षमता दी है कि वह स्वयं व ईश्वर को जान सकता है। मनुष्य की चेतना के सर्वोच्च स्तर पर होता है। मनुष्य ही प्रयत्न करके आध्यात्मिक शक्ति द्वारा मुक्ति को प्राप्त कर सकता है।

6. गुरु वशिष्ठ द्वारा दिया गया सातों चक्रों का ज्ञान एवं वर्णन (Knowledge and description of the seven chakras given by Guru Vashishtha)

गुरु वशिष्ठ गुरुकुल में सभी शिष्यों को समझाते है कि शरीर के मुख्य केंद्रों में निरंतर शक्ति का स्पंदन होता रहता है और जब तक उसे जगा कर अपने काबू में ना किया जाए तब तक उसका कोई लाभ नहीं होता। वे यह भी समझाते हैं कि हर मानव शरीर में शक्ति के सात केंद्र होते हैं जिसे योगाभ्यास द्वारा जागृत किया जा सकता है। सबसे पहला चक्र 'मूलाधार चक्र' है। जिस रूप में यह शक्ति निवास करती है उसे 'कुंडलिनी' भी कहते हैं। गुरु की कृपा और साहित्य से इस शक्ति को जगाकर दूसरे केंद्र तक पहुंचाया जाता है जिसे 'स्वाधिष्ठान चक्र' कहते हैं। फिर स्वाधिष्ठान चक्र का भेद कर यह शक्ति जब आगे बढ़ती है तब वह तीसरे केंद्र पर पहुंचती है जिसे 'मणिपुर चक्र' कहते हैं। इस चक्र को भेद कर यह शक्ति चौथे केंद्र पर पहुंचती है जिसे 'अनाहत चक्र' कहते हैं। यहां से 'विशुद्ध चक्र' और फिर यह शक्ति 'आज्ञा चक्र' को जागृत करती है। आज्ञा चक्र श्वेत वर्ण और प्रगति के मन में 2 पंक्तियां के बीच स्थित होता है जिसका बीज मंत्र है 'ॐ'। जब यह शक्ति जागृत होती है तब सब केंद्रों में ऊर्जा और तेज का वेग होता है। कुंडलिनी जब आगे बढ़ती है तो साधक को चेतना की अलग-अलग प्रश्नों आयामों का अनुभव होता है। जब वह छठे चक्र का भेदन करके सहस्त्र तक पहुंचती है तो योगी पूर्ण समाधि में लीन हो जाता है। वहां पहुंचकर अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है जहां मानव की चेतना आदि और अंत की सीमाओं को पार कर जाती है। इससे हमें मानव शरीर के सात ऊर्जा केंद्रों के बारे में जानने को मिलता है। मनुष्य जीवन का वास्तव में सही परिचय ऊर्जा ही है। यह ऊर्जा हर मनुष्य के पास उपलब्ध होती है परंतु जानकारी व ज्ञान के अभाव में मनुष्य की यह शक्तियां उसके शरीर में सुप्त अवस्था में रहती है।

अगर वास्तव में हमें मनुष्य जीवन में चेतना के सर्वोत्तम स्तर को पाना है तो हमें हमारे शरीर में इन केन्द्रों को जागृत करना होगा। एक विशेष बात यह है कि हर ऊर्जा केंद्र शरीर के एक विशेष ऑर्गन से जुड़ा होता है। जब किसी विशिष्ट ऑर्गन पर ऊर्जा का प्रभाव कम हो जाता है तो उस ऑर्गन से संबंधित बीमारी हमारे शरीर में होने लगती है। कहने का आशय यह है कि बीमारी से संबंधित ऑर्गन का पता करके अगर हम संबंधित चक्र केंद्र को जागृत कर ऊर्जा के स्तर को बढ़ाना सीख लेते हैं तो वह ऑर्गन स्वस्थ होने लगता है और बीमारी से हम ठीक होने लगते हैं क्योंकि सब कुछ ऊर्जा ही तो है।

7. निष्काम कर्म (Selfless Action)

जब राम व लक्ष्मण मारीच व सुबाहु जैसे राक्षसों का अंत करके गुरू विश्वामित्र के पास आते हैं तब गुरू विश्वामित्र उनसे कहते हैं ''दशरथ नंदन तुमने हमारे सिद्ध आश्रम को निर्भय कर दिया है। तपस्वी मुनिजनों की ओर से हम तुम्हारा अभिनंदन करते हैं।'' इस पर श्रीराम कहते हैं हमें गुरूजनों का अभिनन्दन नहीं अपितु आशीर्वाद चाहिए। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें निष्काम कर्म करना चाहिए। जब हम दूसरों की मदद के लिए कोई काम करते हैं जिसमें खुद का कोई स्वार्थ नहीं होता तो वही कर्म निष्काम कर्म बन जाता है। ऐसे कर्म के परिणाम से ही मनुष्य को जीवन में आशीष प्राप्त होता है।

8. पवित्र गंगा पूजनीय है (Holy Ganga is divine)

जब गुरू विश्वामित्र राम और लक्ष्मण के साथ गंगा तट पर पहुंचते हैं तब वह उनसे पुष्पों द्वारा गंगा को पूजन के लिए कहते हैं। पुष्पों द्वारा गंगा की पूजा करने के बाद गुरू विश्वामित्र उन्हें गंगा के धरती पर आने की कथा सुनाते हैं। कथा सुनाने के बाद वह कहते हैं ''आने वाले युगों में देवी-देवताओं के प्रति आस्था कम हो जायेगी परन्तु गंगा का गौरव कभी कम नहीं होगा। यह जिस भू-भाग में बहेगी वह सदैव हरा-भरा रहेगा। गंगा का पवित्र जल जीवन से मृत्यु तक मानव के लिए उपयोगी रहेगा। अनंतकाल तक लोग इसे गंगा मैया कहकर माता से भी महान मानकर इसकी पूजा करेंगे एवं संसार की सभी नदियों में सर्वप्रथम गंगा अग्रणी रहेगी। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें नदियों के प्रति आदर भाव रखना चाहिए। ऐसे भी कहते हैं कि ''जल ही जीवन है''। हमारे शरीर में लगभग 70 प्रतिशत भाग जल ही होता है। फिर गंगा नदी तो गंगोत्री से आरम्भ होकर पूरे हिम पर्वत की महान तपोभूमि से जड़ी बूटियां आदि के गुण भी अपने साथ लेकर आती है। जल हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा व्यवहार हम उसके साथ करते हैं। जल की अपनी याददाश्त होती है फिर गंगा जल हो तो कहना ही क्या?

9. क्रोध के समय संयम बनाये रखें (Stay calm and composed at the time of anger)

जब प्रभु श्रीराम सीता जी के स्वयंवर में शिव धनुष को उठाकर तोड़ देते हैं तब परशुराम जी अत्यन्त क्रोध के भाव में वहाँ पहुंचते हैं। उन्हें अत्यंत

क्रोध में देखकर सभा में बैठे हुए सारे राजा और राजकुमार घबरा जाते हैं । सभी उन्हें अपना परिचय देकर उनको प्रणाम करते हैं। तब महाराज जनक उन्हें प्रणाम व गुरू विश्वामित्र उनका अभिनंदन करते हैं। गुरू विश्वामित्र श्रीराम व लक्ष्मण को बुलाकर उनकी चरण वंदना करने को कहते हैं। फिर भगवान परशुराम उनका परिचय देने को कहते हैं। तब श्रीराम बड़ी विनम्रता से कहते हैं आप तो स्वयं भगवान हैं और भगवान को अपने हर भक्त की पहचान होती है। इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि अगर कोई भी भावावेश में आकर अपना क्रोध प्रकट करे तो हमें शांति से काम लेना चाहिए। अपने विनम्र व्यवहार से ऐसी परिस्थिति को सहज बना लेना चाहिए।

10. बोलने से पहले विचार करें (Think before you speak)

भगवान परशुराम क्रोध में आकर कहते हैं ''कौन है वो शिव द्रोही, मैं शिव द्रोही को मृत्युदंड दूंगा। यहां मौजूद सभी में से एक के भी प्राण नहीं बचेंगे।'' तब लक्ष्मण उनसे कहते हैं एक धनुष टूट जाने पर इतना क्रोध क्यों कर रहे हो, हमने तो बचपन में ऐसे कई धनुषों को तोड़ दिया था। इस पर परशुराम जी कहते हैं कि विश्वभर में सम्मानित इस शिव धनुष से शंकर ने तीव्राई का वध किया था। यह धनुष ऐसा वैसा धनुष नहीं है। परशुराम विश्वामित्र से कहते हैं ''इसे हमारे क्रोध और पराक्रम की शक्ति बताओ।'' इस पर लक्ष्मण उनका विरोध करते हैं और बाण चलाने के लिए तैयार हो जाते हैं। परंतु श्रीराम उन्हें रोक देते हैं। तब गुरू विश्वामित्र परशुराम से कहते हैं ''बच्चों के दोष पर बड़े क्रोध नहीं करते।'' तब महाराज जनक कहते हैं ''आपको क्रोध शोभा नहीं देता, भगवान यदि बालक कोई चपलता दिखाता है, गुरू, माता, पिता उसका आनंद लेते हैं, द्वेष नहीं करते।'' इससे हमें यह सीख मिलती है कि शक्ति के मद में आवेशित भाव से बुरे शब्द नहीं बोलने चाहिए। ऐसा करने से बाद में पछताना पड़ता है। हर परिस्थिति में बोलने से पहले विचार अवश्य कर लेना चाहिए। मुंह से निकले शब्द बाणों से भी अधिक गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

11. गुरू वशिष्ठ द्वारा सातों चक्रों का ज्ञान एवं वर्णन करना (Knowledge and description of the seven chakras given by Guru Vashishtha)

गुरू वशिष्ठ गुरूकुल में सभी शिष्यों से कहते हैं कि शरीर के मुख्य केंद्रों में निरंतर शक्ति का स्पंदन होता रहता है और जब तक उसे जगाकर अपने काबू में न किया जाये तब तक उसका कोई लाभ नहीं होता। वे बताते हैं कि हर मानव शरीर में इस शक्ति के सात केंद्र होते हैं जिन्हें योगाभ्यास द्वारा जागृत किया जा सकता है। सबसे पहला चक्र मूलाधार चक्र है। जिस रूप में यहां शक्ति निवास करती है उसे कुंडलिनी भी कहते हैं। गुरू की कृपा और सहायता से इस शक्ति को यहां से जगाकर दूसरे केंद्र तक पहुंचाया जाता है जिसे स्वादिष्ठान चक्र कहते हैं। फिर स्वादिष्ठान चक्र को भेद कर यह शक्ति जब आगे बढ़ती है तो तीसरे केंद्र पर पहुंचती है जिसे मणिपुर चक्र कहते हैं। इस चक्र का भेदन कर यह शक्ति चौथे केंद्र पर पहुंचती है जिसे अनाहत चक्र कहते हैं। यहां से विशुद्ध चक्र और फिर यह शक्ति आज्ञा चक्र को जागृत करती है। आज्ञा चक्र श्वेतवर्णों और प्रगति के मन में दो पंक्तियों के बीच स्थित होता है जिसका बीज मंत्र है ॐ। जब यह शक्ति जागृत होती है तो सब केंद्रों में ऊर्जा और तेज का वेग होता है। कुंडलिनी जब आगे बढ़ती है तो साधक को चेतना की अलग-अलग परतों का अनुभव होता है। जब वह छठे चक्र का भेदन करके सहस्त्रार तक पहुंचती है तो योगी पूर्ण समाधि में लीन हो जाता है। वहां पहुंचकर आलौकिक आनंद की अनुभूति होती है, जहां मानव की चेतना आदि और अंत की सीमाओं को पार का जाती है। इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि मानव शरीर के सात ऊर्जा केंद्रों के बारे में जानने को मिलता है। मनुष्य जीवन का वास्तव में सही परिचय ऊर्जा ही हैं। यह ऊर्जा हर मनुष्य के पास उपलब्ध तो होती है परंतु जानकारी व ज्ञान के अभाव में मनुष्य की यह शक्तियां उसके शरीर में सुक्त अवस्था में रहती हैं। अगर वास्तव में हमें मनुष्य जीवन में चेतना के सर्वोत्तम स्थल को पाना हो तो हमें हमारे शरीर में उपलब्ध इन सात केंद्रों को जागृत करना होगा। एक विशेष बात यह है कि हर ऊर्जा का केंद्र शरीर के एक विशेष अंग से जुड़ा होता है। जब किसी विशेष अंग पर ऊर्जा का प्रभाव कम हो जाता है तो उस अंग से संबंधित बीमारी हमारे शरीर में होने लगती है। कहने का आशय यह है कि बीमारी से संबंधित अंग का पता करके अगर हम संबंधित चक्र केंद्र को उजागर कर ऊर्जा के स्तर को बढ़ाना सीख लेते हैं तो वह अंग स्वस्थ होने लगता है और बीमारी से हम ठीक होने लगते हैं।

12. पिता का सम्मान व मर्यादित व्यवहार (Respect of father and dignified behavior)

जब श्रीराम अपने पिता के वचनों की पूर्ति के लिए वन जाने को तैयार हो जाते हैं तब लक्ष्मण इसका विरोध करते हैं। वह माता कैकेयी को माता बुलाने से इंकार कर देते हैं और अत्यंत क्रोध में आकर अनर्गल बातें करने लगते हैं। वह अपने पिता को भी स्त्री मोह के कारण दोषी ठहराते हैं। इस पर श्रीराम उनसे नाराज हो जाते हैं और अपने पिता की पीड़ा का अहसास दिलाते हैं। वे बताते हैं कि उनके पिता इस समय धर्म संकट में हैं।

उनका संकट स्त्री मोह नहीं अपितु धर्म है। वह कहते हैं ''पुत्र होने के नाते मेरा एक ही कर्त्तव्य है कि मैं वही काम करूं जिसमें उनके सत्य, उनके धर्म, उनकी प्रतिज्ञा की क्षति ना हो, बल्कि उनकी कीर्ति बढ़े।'' वह कहते हैं कि पिता तो मनुष्य का प्राणदाता होता है। इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि हमें सदैव मर्यादित आचरण करना चाहिए। साथ ही साथ हमें किसी भी संकट के कारण का ठीक से पता लगाना चाहिए। अमर्यादित आचरण, व्यवहार व अमर्यादित शब्दों के कारण बाद में पछताना पड़ता है। हमें मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की तरह पिता के सम्मान की रक्षा करनी चाहिए तथा धैर्य बनाए रखना चाहिए। अपने पिता का धर्मपालन में सहयोग करना चाहिए।

13. छोटे भाई का बड़े भाई के प्रति सेवक का भाव होना चाहिए (Younger brother's attitude of reverence and gratitude towards the elder brother)

जब लक्ष्मण श्रीराम से उनके साथ वन जाने के लिए आग्रह करते हैं तब माता सुमित्रा लक्ष्मण से कहती हैं कि तुम्हारे लिए जहां राम है वही तुम्हारी अयोध्या है। वह कहती हैं तुम्हें एक सेवक की तरह राम और सीता की सेवा करनी होगी। रास्ते के कंकर साफ करने होंगे तथा रात को पहरा देना होगा ताकि सीता महलों के सारे सुख भूल जाएं। वह कहती हैं कि संसार में सेवक का धर्म सबसे कठिन धर्म होता है। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि लक्ष्मण की भांति हमें भी अपने बड़े भाई के प्रति सेवक भाव रखना चाहिए। हमारे देश की सबसे विशिष्ट बात जो भारत को महान बनाती है वह परिवार व्यवस्था है। जब छोटे भाई का अपने बड़े भाई के प्रति सेवा करने का भाव होता है तो परिवार व्यवस्था मजबूत बनती है। इसी कारण परिवार में रहने वाले लोगों के बीच भावनात्मक संबंध बेहतर बनते हैं।

14. राजा को महत्त्वपूर्ण निर्णय सर्वसम्मति से लेने चाहिए (The king should take important decisions unanimously)

महाराज दशरथ गुरू वशिष्ठ के पास राम को राज्य सौंपने के बारे में सलाह लेने आते हैं। वे कहते हैं ''राम अब हर प्रकार से योग्य हो गये हैं। सेवक, मंत्रीगण, नगर निवासी, यहाँ तक कि शत्रु भी उनका आदर करते हैं। वह प्रजा के भी प्रिय हैं। इसलिए मैं राज्य का भार उसे सौंपना चाहता हूँ।'' इस पर गुरू वशिष्ठ कहते हैं कि ''आपकी बात से मुझे अपार आनंद प्राप्त हुआ, आपका प्रस्ताव अति उत्तम व उचित है।'' आगे वे कहते हैं कि आपको एक राज्य सभा का आयोजन करना चाहिए, उसमें उप प्रदेशों के सामंत, राजाओं, समस्त मंत्रियों, अधिकारियों, प्रजा के प्रमुख लोगों को बुलाकर उनकी स्वीकृति लेनी चाहिए ताकि सर्वसम्मति से राम को राजा घोषित किया जा सके। इससे हमें यह सीख मिलती है कि एक कुशल राजा द्वारा सर्वसम्मति से राजकाज किया जाना चाहिए। ऐसा करने से राज्य में रहने वाले अधिकतम लोगों को सुख व शांति प्रदान की जा सकती है। हमारा देश प्रजातंत्र (democracy) पर आधारित है। इस व्यवस्था में कार्यपालिका के रूप में कार्य करने वाले अधिकारियों, व्यवस्थापिका के रूप में मंत्रीगण व न्यायापालिका के रूप में कार्य करने वाले न्यायाधीश की प्रत्येक कार्य में व निर्णय में जनमानस व जनहित का ध्यान रखना चाहिए।

15. गृहस्थाश्रम के पश्चात् मुक्ति का प्रयास करें (Strive for emancipation after leading a family life)

महाराज दशरथ राम के राज्याभिषेक के लिए राज्य सभा का आयोजन कराते हैं। वहां पर उपस्थित सभी जन उनकी बात पर अपनी स्वीकृति देते हैं। वे श्रीराम के गुण को देखकर उन्हें अयोध्या के राजा बनने की अपनी सहमति देते हैं। इस पर महाराज दशरथ राम को सभा में बुलाने का आदेश देते हैं। राम के आने पर वह उन्हें इस बात से अवगत कराते हैं। परंतु श्रीराम राजा बनने के लिए मना कर देते हैं। वह अपने पिता के होते हुए राज्य पद ग्रहण कर लेना अनुचित समझते हैं। इस पर महाराज दशरथ कहते हैं ''तुम अपने पिता के मोह में अपने पिता का हित भूल गये हो।'' वे कहते हैं ''पुत्र पिता का मित्र भी होता है।'' इस पर श्रीराम कहते हैं कि ''मैं सदैव आपके कल्याण की कामना करता हूँ।'' इस पर गुरू वशिष्ठ कहते हैं इस संसार में चार पुरूषार्थ होते हैं- धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष। वीर पुरूष अपने धर्म, अर्थ और काम जैसे पुरूषार्थ पूरा करने के पश्चात्, मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं। यह तभी संभव होता है जब वे राजा की जिम्मेदारी अपने ज्येष्ठ पुत्र को दें। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हर मानव को शास्त्र में बताए अनुसार धर्म का आचरण करते हुए अर्थ उपार्जन करना चाहिए। ऐसे अर्थ द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति के पश्चात् अपने गृहस्थ आश्रम के बाद मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना करनी चाहिए। इसी से मुक्ति संभव होती है।

16. ईश्वर से निकटता ही श्रेष्ठता का आधार है (Proximity to God is the basis of excellence)

जब श्रीराम, लक्ष्मण, माता सीता व निषाद राज, गुरू भारद्वाज के आश्रम में जाते हैं तब निषादराज प्रभू श्रीराम के बराबर का आसन ग्रहण कर लेने

के लिए मना कर देते हैं। इस पर वह कहते हैं कि वह एक नीच जाति के हैं, छोटे आदमी हैं। तब गुरू भारद्वाज कहते हैं अपने आपको छोटा समझना ही तुम्हारा बड़प्पन है। वह कहते हैं ''श्रीराम के मित्र होकर अपने आपको नीच कैसे कहते हो तुम? जो प्रभु का प्रिय हो, जो हरि का जन कहलाए उसकी जाति सबसे ऊँची होती है।'' इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि श्रेष्ठता का आधार कभी उच्च व निम्न जाति नहीं होती। वास्तव में वही श्रेष्ठ है जो ईश्वर के निकट है। इसके अतिरिक्त हमें यह भी समझना चाहिए कि जो व्यक्ति स्वयं को कम समझता है, सरल रहता है, वही व्यक्ति सबसे अधिक सीखता है। हमें भी निषादराज की भांति सरलता व भक्ति के गुण को अपनाना चाहिए।

17. आत्म तरंग दो व्यक्तियों के हृदय में स्पंदन उत्पन्न करती है (Inner vibrations create sensations in the hearts of two people)

जब भरत, शत्रुघ्न के साथ अपने ननिहाल होते हैं तब वह शत्रुघ्न से कहते हैं कि अब यहां मन नहीं लग रहा, अयोध्या वापिस जाने का मन होता है और राम भैया की भी याद आती है। तब उनके नानाजी व मामाजी वहां आते हैं। वह उनकी उदासी का कारण पूछते हैं। इस पर शत्रुघ्न कहते हैं इन दिनों भरत भैया को सबसे अधिक याद राम भैया की आती है। तब उनके मामा हिदाजीत कहते हैं कि अवश्य राम ने भी तुम्हें याद किया होगा। वह कहते हैं आत्मतरंग दोनों ओर से हृदय के तारों को झंकृत करती है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि जब दो व्यक्तियों के मध्य सच्चा प्रेम होता है तो इसके परिणाम से उनके हृदय में स्पंदन उत्पन्न होने लगता है। इस स्पंदन के कारण उन्हें एक दूसरे की याद आने लगती है।

18. क्रोध के समय संयम बनाये रखें (Rage reduces thinking power)

जब प्रभु श्रीराम सीता जी के स्वयंवर में शिव धनुष को उठाकर तोड़ देते हैं तब परशुराम जी अत्यन्त क्रोध के भाव में वहाँ पहुंचते हैं। उन्हें अत्यंत क्रोध में देखकर सभा में बैठे हुए सारे राजा और राजकुमार घबरा जाते हैं । सभी उन्हें अपना परिचय देकर उनको प्रणाम करते हैं। तब महाराज जनक उन्हें प्रणाम व गुरू विश्वामित्र उनका अभिनंदन करते हैं। गुरू विश्वामित्र श्रीराम व लक्ष्मण को बुलाकर उनकी चरण वंदना करने को कहते हैं। फिर भगवान परशुराम उनका परिचय देने को कहते हैं। तब श्रीराम बड़ी विनम्रता से कहते हैं आप तो स्वयं भगवान हैं और भगवान को अपने हर भक्त की पहचान ही होती है। इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि अगर कोई भी व्यक्ति भावावेश में आकर अपना क्रोध प्रकट करे तो हमें शांति से काम लेना चाहिए। अपने व्यवहार से ऐसी परिस्थिति को सहज बना लेना चाहिए।

19. बोलने से पहले विचार करें (Think before you speak)

भगवान परशुराम क्रोध में आकर कहते हैं ''शिव द्रोही को हम मृत्युदंड देंगे और यहां मौजूद सभी में से एक के भी प्राण नहीं बचेंगे।'' तब लक्ष्मण उनसे कहते हैं एक धनुष टूट जाने पर इतना क्रोध क्यों कर रहे हो, हमने तो बचपन में कई धनुषों को तोड़ दिया था। इस पर वह कहते हैं कि विश्वभर में सम्मानित यह शिव धनुष से शंकर ने तीव्राई का वध किया था। यह अन्य धनुषो जैसा नहीं है। परशुराम विश्वामित्र से कहते हैं इसे हमारे क्रोध और पराक्रम की शक्ति बताओ। इस पर लक्ष्मण उनका विरोध करते हैं और बाण चलाने के लिए तैयार हो जाते हैं। परंतु श्रीराम उन्हें रोक देते हैं। तब गुरू विश्वामित्र परशुराम से कहते हैं बच्चों के दोष पर बड़े क्रोध नहीं करते। तब महाराज जनक कहते हैं ''आपको क्रोध शोभा नहीं देता, भगवान यदि बालक कोई चपलता दिखाता है, गुरू, माता, पिता उसका आनंद लेते हैं, द्वेष नहीं करते।'' इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि शक्ति के मद में आवेशित भाव से बुरे शब्द नहीं बोलने चाहिए। ऐसा करने से बाद में पछताना पड़ता है। हर परिस्थिति में बोलने से पहले विचार अवश्य कर लेना चाहिए।

20. क्रोध के समय मनुष्य की शक्ति क्षीण हो जाती है (A the time of anger, Man's power become feeble)

रामानन्द सागर जी परशुराम जी के बारे में बताते हैं कि उन्होंने अपने तपोबल से कई पुण्य लोक अर्जित कर लिये थे। अपनी सिद्धियों के कारण मन की गति से कहीं भी आ-जा सकते थे। इसलिए अंशावतार होते हुए भी उनमें बहुत अहंकार था। इस पर वे बताते हैं कि अहंकार बहुत सी बुराईयों की जड़ हैं। अहंकार से उसे सामने वाले की महत्ता नहीं दिखती। वह बताते हैं कि एक अहंकारी पुरूष की शक्ति क्षीण करना वही है जो लक्ष्मण ने अपनाया। उन्होंने अपनी बातों से परशुराम जी को बहुत क्रोधित कर दिया। वह बताते हैं क्रोध से उत्तेजित मनुष्य की शक्ति क्षीण हो जाती है इसलिए गंभीर परिस्थिति आने पर हमें उत्तेजित न होने की जगह शांत रहना चाहिए तभी हम विजय को प्राप्त कर सकते हैं। इससे हमें यह सीख मिलती है कि क्रोध के क्षणों में हमारी शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए अगर वास्तव में हमें विजय प्राप्त करनी है तो हमें क्रोध की शक्ति से दूर तथा श्रीराम की भांति धैर्य शक्ति का उपयोग करना चाहिए।

21. दूसरों को खुशी देने से ही सच्चे उत्सव की अनुभूति होती है (True celebration is felt only by giving happiness to others)

महारानी कौशल्या को पता चलता है कि जनकपुरी से राम और सीता के विवाह का संदेश आया है, तब वह आर्य सुमन्त से कहती हैं कि ब्राह्मण के लिए सहस्त्र गौ, भंडार गृह से अन्न, वस्त्र प्रजानन में बंटवा दीजिये। वह कहती है कि राम की बारात जाने से पहले ब्राह्मणों और याचकों को इतना दान दीजिये कि उन्हें कुछ मांगने की आवश्यकता न पड़े। जिस राजा के राज्य में प्रजा का एक भी प्राणी दु:खी रह जाये उसे अपना कोई उत्सव मनाने का अधिकार नहीं होता। इससे हमें यह सीख मिलती है कि वास्तव में उत्सव तभी भली-भांति बनाया जाता है जब हम दूसरों के जीवन में खुशियां भर दें क्योंकि यह एक प्राकृतिक नियम है। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है तथा सुख देने से ही सुख की अनुभूति होती है।

22. विनम्रता एक दिव्य गुण है (Humility is a divine quality)

गुरू वशिष्ठ, महाराज दशरथ, भरत, शत्रुघ्न एवं अन्य मंत्री और ऋषि, राम और सीता के विवाह के लिए जनकपुरी पहुंचते हैं। वहां गुरू वशिष्ठ महाराज जनक से कहते हैं कि परमेश्वर की इच्छा से आज अयोध्या और मिथिला दोनों बराबर के संबंधी हो गये हैं। इस पर महाराज जनक कहते हैं ''नहीं महर्षि, आपका दास हूं, मेरी और आपकी बराबरी कैसे?'' इस पर महाराज दशरथ उन्हें कहते हैं कि आपने ठीक कहा, आपकी और मेरी बराबरी कैसे? आज आप दाता हैं और मैं एक याचक, एक भिखारी जो आपके द्वार पर कन्या का दान मांगने आया है। वह कहते हैं कि देने वाला दाता तो सदैव महान होता है। इससे हमें यह देखने को मिलता है कि दोनों ही राजा कितने प्रतापी है, फिर भी उनकी विनम्रता कितनी बड़ी है। यदि सभी लोग राजा दशरथ व राजा जनक की तरह विनम्र हो जायें तो हमारा देश वास्तव में कितना महान बन जाये।

23. पिता की आज्ञा का पालन करना पुत्र का परम कर्त्तव्य है (It is an ultimate duty of a son to obey the orders of his father)

जब श्रीराम अपने पिता महाराज दशरथ के पैर दबा रहे होते हैं तब महाराज दशरथ उनसे कहते हैं कि तुमने जो कुछ किया, पिता की आज्ञा पालन, गुरुजनों की सेवा, प्रजा पालन, ऋषिजनों, मुनिजनों, तपस्वियों की सुरक्षा उसी में तुम्हारी महानता है। वह कहते हैं कि तुम्हारे जैसे आदर्श पुत्र पाकर सभी का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया है। इस पर श्रीराम कहते हैं मैनें तो बस वह किया जो आपका निर्देश था। हर पुत्र का धर्म है, पिता अपने मुँह से ना भी कहे, फिर भी यदि पिता के मन की कोई इच्छा हो तो उसे प्राण देकर पूरा करे। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें सच्चे मन से अपने पिता की सेवा करनी चाहिए तथा उनकी भावनाओं का आदर करना चाहिए।

24. अधर्म द्वारा प्राप्त की गई विजय कल्याणकारी नहीं होती (The victory obtained by unrighteousness is not beneficial)

लक्ष्मण राम के पास आते हैंऔर यह कहते हैं कि मेघनाद अदृश्य होकर छल से युद्ध कर रहा है। वे श्री राम से ब्रह्मा स्त्र चलाने की अनुमति चाहते हैं। इस पर राम कहते हैं कि रण से भागे शत्रु, आपकी शरण में आये शत्रु एवं विक्षिप्त व्यक्ति पर ब्रह्मास्त्र चलाना धर्म के विरूद्ध है। अधर्म द्वारा प्राप्त की गई विजय कभी कल्याणकारी नहीं होती। इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि निर्णय लेने का आधार धर्म होना चाहिए। धर्म के विरूद्ध जाकर अगर हमें जीत मिल भी जाये तो वह जीत हार ही सिद्ध होगी। वह जीत कभी कल्याणकारी नहीं होगी एवं ऐसी जीत के परिणाम से हमारा स्वयं का मन भी अशांत हो जाता है।

25. वीर पुरूष कर्म करते हैं, फल पर ध्यान नहीं देते (Brave men believe in action and not in results)

लक्ष्मण को घायल कर जब मेघनाद वापस लंका आते हैं तो वह अपने ही मुँह से खुद की बढ़ाई करते हैं। वे कहते हैं कि वह लंका से अयोध्या तक शवों का ढेर लगाकर उस के ऊपर से अयोध्या जायेंगे। इस पर रावण के नाना माल्यवाण यह कहते हैं कि वीर पुरूष कर्म करते हैं, फल पर ध्यान नहीं देते। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें क्षणिक सफलता मिल जाने पर आवेग में आकर दूसरों का उपहास व स्वयं की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से बाद में हमें शर्मिंदगी उठानी पड़ सकती है।

26. नैराश्य की पराकाष्ठा का नाम हार है (The pinnacle of disappointment culminates into failure)

राम लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर शोक में हो गए हैं। विभीषण उन्हें सहानुभूति दे रहे हैं कि जिसको जीवन मिला है उसका मरण भी होता है। इस पर सुग्रीव कहते हैं कि निराशा की पराकाष्ठा का नाम हार है। ना तो किसी का मरण हुआ है ना ही किसी की हार। इससे हमें यह सीख मिलती है

कि एक निराशा का विचार दूसरी निराशा के विचार को जन्म देता है और इसी तरह यह निराशा का विचार आगे बढ़कर हमारे हारने का कारण बन जाता है। इसलिए हमें स्वयं नैराश्य के विचार से मुक्त रखना चाहिए। जिन भी चीजों से हम आसक्त हो जाते हैं वही चीज आगे जाकर हमारे दुःख व नैराश्य का कारण बन जाती है।

27. धैर्य, सहजता व सरलता दैवीय गुण हैं (Patience, simplicity ans sensibility are divine qualities)

हनुमान दैवीय जड़ी बूटियों से भरे सुमेरू पर्वत को वायुमार्ग से लंका लेकर जा रहे होते हैं। इस दौरान भरत अपने तीर से हनुमान को मूर्छित कर देते हैं। मूर्छित अवस्था में हनुमान अपने आराध्य श्रीराम का नाम ही ले रहे होते हैं। भरत को अपनी गलती का अहसास होता है तथा वह ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि यदि मैनें मन, वचन, कर्म से श्रीराम जी की भक्ति की है तो हनुमान होश में आ जायें। होश में आने के बाद जब हनुमान भरत को श्रीराम व लक्ष्मण की स्थिति के बारे में बताते हैं तब भरत भावुक हो जाते हैं। इस पर हनुमान कहते हैं कि वीर पुरूषों को धैर्य रखना चाहिए। इस दृश्य से हम यह सीखने को मिलता है कि उच्च स्थिति या पद प्राप्त करने के बाद भी हमें सहज व सरल रहना चाहिए। बिना सामने वाले को जाने, उसके संबंध में धारणा बनाकर निर्णय लेने से बाद में पछताना पड़ सकता है।

28. विनम्रता दैवीय गुण है (Politeness is an angelic quality)

जब हनुमान हिमालय के बीच स्थिति दैवीय बूटियाँ धारण करने वाले सुमेरू पर्वत पर पहुंचते हैं। वहां रक्षक के रूप में दैवीय शक्तियां उनका परिचय व आने का कारण पूछती हैं तो हनुमान विनम्रतापूर्वक अपना परिचय देते हैं तथा अपना आने का कारण बताते हैं। इसके पश्चात् उनसे प्रसन्न होकर वह उन्हें बूटियाँ ले जने की आज्ञा देते हैं। इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि सामर्थ्यवान होने के बावजूद हमें सदैव विनम्र रहना चाहिए।

29. राजधर्म का आधार जनहित होता है (The paramount duty of a ruler is to think in public interest)

जब मेघनाद विभीषण से कहते हैं कि आपने अपने राज्य से विश्वासघात किया है। आपने आज शत्रु को कुलदेवी के गुप्त मंदिर का भेद बताकर देशद्रोह किया है। इस पर विभीषण मेघनाद से कहते हैं कि मैंने देशद्रोह नहीं किया है। जो राजा दूसरों का धन, पराई स्त्री पर हाथ डालता है उस राजा का त्याग कर देना ही धर्मोचित माना जाता है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि कर्मचारियों द्वारा निर्णय लेने का आधार मुख्यतः अपने मालिक का व्यक्तिगत हित ही होता है। इसी कारण अंजाने में ही सही पर वे अपने ही मालिकों का नुकसान कर बैठते हैं।

30. आयुर्वेद एक श्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है (Ayurveda is the finest techniques of medical science)

श्री हनुमान सुमेरू पर्वत को लेकर मूर्च्छित हुए लक्ष्मण के समक्ष पहुंच जाते हैं। वेद सुषेन प्रसन्न होते हैं। वे श्री हनुमान द्वारा लाए गए पर्वत की पूजा करते हैं तथा अचेतावस्था में पड़े श्री लक्ष्मण जी के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं। इसके पश्चात् संजीवनी बूटी से दवा तैयार कर लक्ष्मण जी को पिलाते हैं। दवा के प्रभाव से लक्ष्मण जी तुरन्त होश में आ जाते हैं। आयुर्वेद एक श्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है जो पूर्णतः प्राकृतिक है। वर्तमान में हम सभी लोग पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति पर आश्रित हो गए हैं। जिस कारण हमारी पाचन क्षमता तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने लगी है। सुषेन वेद की भांति उपचार के दौरान भावनात्मक व ईश्वरीय शक्ति का भी प्रयोग चिकित्सकों को करना चाहिए।

31. पुत्र का धर्म पिता की आज्ञा का पालन करना है (Obeying the orders of a father is the supreme duty of a son)

इन्द्रजीत रावण से कहते हैं कि राम-लक्ष्मण नर नहीं, अवतार हैं। वे देवताओं के भी देवता हैं। जब रावण यह सब सुनते हैं तब उन्हें क्रोध आ जाता है तब इन्द्रजीत कहते हैं कि पिताश्री ! आपके अपमान नहीं कल्याण के लिए आया हूं। पुत्र का एक ही धर्म होता है पिता के चरणों की सेवा करना। जो अपने पिता को अकेले छोड़कर चला जाता है उन्हें देवता क्या भगवान भी स्थान नहीं देते। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि मुसीबत के समय पुत्र को पिता का साथ देना चाहिए। इन्द्रजीत राम व लक्ष्मण को युद्ध के दौरान समझ गया था कि वे दोनों सामान्य नर नहीं है। यदि अब भी वे युद्ध करेंगे तो उसकी मृत्यु निश्चित है। बावजूद इसके वह अपने पिता के कहने पर फिर से युद्ध भूमि में जाता है। युद्ध भूमि में वीरगति पाकर इतिहास में अमर हो जाता है।

32. अहंकार विनाश का मूल है (Ego is the root of destruction)

रावण को उसका अहंकार मानने नहीं दे रहा कि उसके पुत्र इन्द्रजीत की मृत्यु हो गई है। रावण कहते हैं कि मृत्यु तो मेरी दासी है, वो इन्द्रजीत को

कैसे मार सकती है। तब रावण के नाना जी कहते हैं कि इन्द्रजीत को मृत्यु ने नहीं मारा, आपके अहंकार ने मारा है। आपने बल व पराक्रम से काल को तो बांध दिया परंतु काम व अहंकार को नहीं बांध सके। आप काम व अहंकार के कारण पग-पग पर हार रहे हैं। इससे हमें यह सीख मिलती है कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु अहंकार है। काम, क्रोध, लोभ व मोह की तो दिशा बदलकर सदुपयोग किया जा सकता है परंतु अहंकार का तो कोई भी उपयोग नहीं है। इस प्रकार अहंकार ही अन्य अवगुणों का मूल है व मनुष्य के विनाश का कारण है।

33. प्रजा के हित के लिए अहंकार को त्याग देना चाहिए (Ego should be abandoned for the benefit of the subjects)

रावण के नाना माल्यवंत जी रावण से कहते हैं कि अब भी तुम्हारे पास एक मौका है, लंका के सर्वनाश को रोकने का। सीता को राम के पास छोड़ आओ। तब रावण कहता है कि अब छोड़ के आऊंगा तो मेरे मृत पुत्र पूछेंगे तो मैं क्या जवाब दूंगा? प्रजा तो मुझे कायर समझेगी। तब माल्यवंत कहते हैं कि कभी-कभी अपनी प्रजा के लिए अपना अहंकार त्याग देना अच्छी बात होती है। वरना इसका परिणाम सिर्फ तुम्हारा नहीं पूरे राष्ट्र लंका का सर्वनाश हो सकता है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि एक राजा का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व प्रजा के प्रति होता है। अगर अपने अहंकार को छोड़ने से प्रजा की जान-माल की हानि बच जाती है तो ऐसी दशा में अहंकार का त्याग करना ही उचित होता है।

34. सुख के बाद दुःख का आना निश्चित है (Sorrow is sure to come after happiness)

आर्य सुमन्त वन से अकेले लौटने के बाद महर्षि वशिष्ठ के साथ महाराज दशरथ के सामने उपस्थित होते हैं। महाराज दशरथ उनसे कहते हैं ''अकेले आ गए मेरा राम कहां हैं? मेरी सीता कहां है?'' तब आर्य सुमन्त उनसे क्षमा मांगते हैं और अपने आपको प्राण दंड देने के लिए कहते हैं। इस पर महाराज ऐसे करने से मना करते हैं और उनसे वह उस स्थान पर पहुंचाने का आदेश देते हैं जहां राम को छोड़ा था। वे कहते हैं राम जैसे आज्ञाकारी पुत्र के बिछड़ने पर भी मेरे प्राण नहीं गये। इस पर महर्षि वशिष्ठ कहते हैं कि जीवन-मरण, हानि-लाभ, प्रियजनों का मिलना और बिछड़ना यह सब काल और कर्म के अधीन है। जिस प्रकार दिन और रात्रि का आना कोई टाल नहीं सकता उसी प्रकार अपने-अपने समय पर सुख और दुःख का आना अटल है। इसीलिए धीर वीर दुःख सहकर भी शोक नहीं करते। इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि जिस प्रकार हमारे जीवन में भी सुख और उसके बाद दुःख और फिर से सुख आते ही हैं तब सुख और दुःख को सहर्ष ही स्वीकार कर लेना चाहिए। भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण भी यह कहते हैं कि जो व्यक्ति सुख आने पर हर्ष के मारे नहीं उछलता है तथा दुःख के समय विचलित नहीं होता उसी व्यक्ति को स्थिरप्रज्ञ कहते हैं। वास्तव में स्थिरप्रज्ञ बनने के लिए हमें कामनाओं से दूर होना होता है।

35. दुःख का वास्तविक कारण मोह है (The real cause of sorrow is attachment)

जब महाराज दशरथ श्रीराम के वियोग से अत्यंत दुःखी होकर महर्षि वशिष्ठ से कहते हैं कि कभी-कभी दुःख सहन की सीमा को लांघ जाते हैं तब महर्षि वशिष्ठ कहते हैं कि राम के लिए आपकी यह मनोदशा मोह के कारण है अन्यथा यह वो समय है जब आपको राम पर गर्व होना चाहिए। वचन झूठा न करने के लिए इतिहास में रघुवंश की कीर्त पर कलंक न आने के लिए श्रीराम ने इतना बड़ा साम्राज्य छोड़कर, हंसते-हंसते वन की ओर चले गए उन्होंने इतना सा भी शोक नहीं किया। लक्ष्मण और सीता को देखो, सबने अपना-अपना धर्म निभाया। वे कहते हैं कठिन समय में ही तो धैर्य की परीक्षा होती है। इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि मोह का कारण संबंध है। कोई भी वस्तु या रिश्ता हमें दुःख नहीं पहुंचाता। वास्तव में वस्तु व रिश्तों से हम अपना जितना घनिष्ठ संबंध बना लेते हैं उसी कारण हमें उस वस्तु व संबंध के खोने से कारण दुःख की अनुभूति होती है। भगवद् गीता में भी जब अर्जुन कुरूक्षेत्र में युद्ध करने से पूर्व युद्ध के मैदान में अपने सगे-संबंधी को देखते हैं तो युद्ध के परिणाम से उन्हें खोने का डर अनुभव होता है तथा इसी कारण वह दुःखी होकर युद्ध नहीं करने का फैसला कर रथ के पीछे वाले हिस्से में जाकर बैठ जाते हैं और दूसरी ओर वे कृष्ण से ये भी पूछते हैं ''मैं जीतूंगा या हारूंगा।'' वास्तव में कर्मफल की चाहत भी मनुष्य को आगे जाकर अकर्मण्य बना देती है।

36. बुरे समय में ही परिवार की सभ्यता व संस्कृति की परीक्षा होती है (The civility and culture of a family is tested only in bad times)

भरत, शत्रुघ्न, माताएँ, अयोध्या की सेना व प्रजा श्रीराम को पुनः अयोध्या लाने के लिए चित्रकूट की ओर प्रस्थान करते हैं। भरत को जब निषादराज द्वाराश्रीराम की वन में पीड़ा का पता चलता है तब वे भी श्रीराम की तरह बिना पादुकाओं के चलने का निर्णय लेते हैं। वहां जाने से पहले वे महर्षि भारद्वाज के आश्रम पहुँचते हैं और उनसे कहते हैं कि अयोध्या के राजवंश में ऐसी विपत्ति पहले कभी नहीं आई तब महर्षि भारद्वाज कहते हैं कि ''विपत्ति के समय ही किसी जाति या वंश की सभ्यता व संस्कृति की परीक्षा होती है।'' इससे हमें यह सीख मिलती है कि हर समय एक जैसा नहीं रहता। समय व परिस्थिति हर समय बदलती रहती है। जब किसी परिवार में अच्छे समय के बाद बुरा समय आता है तब ही उस परिवार की सभ्यता व संस्कृति का पता चलता है।

37. भावावेश में आकर कार्य न करें (Don't act impulsively)

जब लक्ष्मण को पता चलता है कि भरत अयोध्या की सेना के साथ चित्रकूट में आगमन कर चुके हैं। तब लक्ष्मण अत्यंत क्रोध में आ जाते हैं। वह श्रीराम से कहते हैं कि ''अब शस्त्र उठाने का समय आ गया है।'' वह श्रीराम को भरत के चित्रकूट आने की सूचना देते हैं और उनको सेना के साथ देखकर उनसे युद्ध के लिए तैयारी की बात करते हैं। यह सुनकर श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं कि ''जो लोग उचित या अनुचित का भली-भांति विचार किये बिना किसी काम को जल्दबाजी में करते हैं वह लोग बाद में पछताते हैं।'' इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि भावावेश में आकर हमें कोई कार्य नहीं करना चाहिए। हर कार्य को करने से पहले भली-भांति विचार कर लेना चाहिए। भावावेश में आकर बिना विचार कार्य कर लेने से बाद में पछताना ही पड़ता है।

38. स्वयं भी धर्म का पालन करें तथा दूसरों के धर्म की पालना में भी उन्हें सहयोग दें (Practice your religion with devotion and help others in doing the same)

भरत श्रीराम, सीता मां व लक्ष्मण को चित्रकूट से पुनः अयोध्या लाने की तैयारी कर रहे होते हैं। तब वह माता कौशल्या के पास जाते हैं और उनसे कहते हैं कि अगर आप भैया राम, भाभी सीता और लक्ष्मण को आज्ञा दे देंगे कि वे अयोध्या लौट आएं तो वे आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करेंगे। तब माता कौशल्या उन्हें समझाती है कि मैं चाहूं तो अभी कह दूं परंतु मां स्वार्थी नहीं होती। अगर पुत्र राम अयोध्या चले तो मुझे सुख प्राप्त होगा परंतु उनके धर्म व कर्त्तव्य की पालना नहीं हो पाएगी। वह यह भी समझाती है कि मैं अपने मोह के कारण राम के धर्म पालन में बाधा उत्पन्न नहीं करना चाहती। मां का प्रेम कभी स्वार्थी नहीं होता। इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि हमें हर समय धर्म का बोध होना चाहिए। हमें ना सिर्फ स्वयं के धर्म व कर्त्तव्य के अनुरूप काम करना चाहिए बल्कि अन्य व्यक्तियों के धर्म व कर्त्तव्य कार्यों में भी बाधा नहीं उत्पन्न करनी चाहिए।

39. सच्चे प्रेम में स्वयं का और प्रियवर की खुशी दोनों का ध्यान रखा जाता है (In true love, one should be aware of the happiness of self and beloved)

राजा जनक राम की प्रशंसा करते हैं और अपनी सहमति रखते हैं, वे भरत से कहते हैं कि जिसमें श्रीराम को प्रसन्नता मिले तुम वही कार्य करो और भरत को यह भी समझाते हैं कि धर्म सबसे बड़ी शक्ति होती है जिस पर आज पूरा ब्रह्माण्ड टिका हुआ है। शास्त्र के अनुसार तीनों लोकों में धर्म से बड़ा कुछ नहीं होता। प्रेम एक ऐसी दिव्य शक्ति है जिस पर किसी भी धर्म का बंधन नहीं होता। निस्वार्थ प्रेम सभी धर्मो से ऊपर है। वे भरत को ये भी समझाते हैं कि तुम श्रीराम से निस्वार्थ प्रेम करते हो इसलिए अभी भरत के प्रेम की जीत हुई। प्रेम निस्वार्थ होता है और जब प्रेम निस्वार्थ है तब वह कुछ मांगता नहीं है। वे आगे कहते हैं इसलिए तुम्हें भी श्रीराम की खुशी का ध्यान रखना होगा। इस दृश्य में प्रेम में धर्म की बहुत सुंदर व्याख्या मिलती है। इस दृश्य में जहां भरत के प्रेम की जीत होती है वहीं दूसरी और राम का धर्म के प्रति समर्पण भी जीत जाता है। वास्तव में सच्चे प्रेम मे त्याग व समर्पण होता है और साथ ही साथ अपने प्रियवर की खुशी का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है।

40. परिश्रम से अर्जित ज्ञान व धर्म मनुष्य के लिए श्रेयस्कर होता है (Knowledge and faith earned by hard work is creditable for man)

राम, सीता व लक्ष्मण महर्षि शरभंग के आश्रम पहुंच जाते हैं। वहां जब महर्षि शरभंग उन्हें प्राप्त दिव्य लोकों की सिद्धियां श्रीराम को देने की बात करते हैं। क्योंकि महर्षि शरभंग को कुछ ही कुछ ही क्षणों बाद भगवान इन्द्र अपने साथ हमेशा के लिए देवलोक ले जाने आने वाले हैं। इसलिए महर्षि शरभंग चाहते हैं कि यह दिव्य सिद्धियां वे श्रीराम को दे दें। तब श्रीराम उन्हें कहते हैं कि 'जो लोग किसी साधु या मुनि के पास उनके तपोबल से कमाई हुई शक्ति के सहारे अपने दुःख मिटाने आते हैं वह मनुष्य उस लज्जाई चोर की भांति होता है जो दूसरों की संपत्ति पर आंख रखता है। यदि मनुष्य स्वाभिमानी है तो वह अपने परिश्रम से कमाई करता है।' इस उपदेश से हमें यह सीख मिलती है कि बिना परिश्रम से अर्जित ज्ञान व धर्म मनुष्य के लिए श्रयकर नहीं होता। हर एक मनुष्य को किसी अन्य के द्वारा पुरुषार्थ धर्म, ज्ञान व सिद्धि प्राप्त नहीं करना चाहिए और ना ही इसकी इच्छा रखनी चाहिए।

41. ऋषियों द्वारा उपदेश संख्या 1 (Sermon by sages, number1): अपने कर्म की अच्छाई पर बुराई को हर घड़ी परखते रहना चाहिए। अपने कर्म को परखने के लिए मनुष्य के पास एक ही कसौटी है और वह यह सोचे कि इसी समय मैं मर जाऊं तो मेरा यह कर्म किस गिनती में आएगा? इसीलिए कोई भूल हो जाए तो तत्काल सुधार लेना चाहिए। यह कभी ना सोचें कि आज की भूल को कल सुधार लूंगा क्योंकि कभी-कभी काल भी समय नहीं देता। इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि जीवन की सबसे बड़ी सीख जीवन की क्षणभंगुरता है। कोई

नहीं जानता कि कब किसको ईश्वर बुला ले। महाभारत में भी अज्ञातवास के समय यक्ष महाराज युधिष्ठिर से पूछते हैं कि जीवन का सबसे बड़ा सत्य क्या है? इसके जवाब में महाराज युधिष्ठिर कहते हैं कि जीवन की क्षणभंगुरता ही जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। अगर आज के परिपेक्ष में बात करें तो एप्पल कंपनी के संस्थापक स्टीव जॉब्स का भी यही कहना था कि वे प्रतिदिन यही सोचते रहते थे कि अगर आज ही जीवन का आखिरी दिन हो तो मैं क्या करता? कोई भी मनुष्य बुरे कार्य इसी वजह से कर पाता है कि वह जीवन के इस महत्त्वपूर्ण सत्य को जानते हुए भी अज्ञानतावश नजरअंदाज कर देता है।

42. ऋषियों द्वारा उपदेश संख्या 2 (Sermon by sages, number 2) : धर्म के मार्ग पर चलने के लिए ज्ञान का प्रकाश आवश्यक है यदि ज्ञान का प्रकाश ना हो तो अंधकार पूर्ण मार्ग पर धर्म एक अंधे की भांति भटक सकता है। इस उपदेश में यह सीख मिलती है कि कर्म करते-करते ज्ञान प्राप्त करते रहना चाहिए साथ ही साथ ज्ञान प्राप्त करते-करते कर्म करते रहना चाहिए। श्रीमद् भगवद् गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने ज्ञान मार्ग को श्रेष्ठ बतलाया है। साथ ही साथ भगवान श्री कृष्ण ने कर्म को सामान्य इंसान के लिए सुगम मार्ग बतलाया है। वास्तव में यह दोनों ही मार्ग एक दूसरे के पूरक है।

43. ऋषियों द्वारा उपदेश संख्या 3 (Sermon number 3 by the sages): जहां जीवन है वहीं मृत्यु है। जहां मंगल है वहीं अमंगल भी साथ खड़ा है। केवल सुख को पकड़ने जाओगे तो दुःख की छाया अवश्य पाओगे। अतः जो सुख-दुःख दोनों से अनासक्त होकर आत्मा में लीन हो जाता है वही आनंद को पाता है, उसी को मुक्ति कहते हैं। इस उपदेश में सुख और दुःख के संदर्भ में बहुत सुंदर व्याख्या जानने को मिलती है। सुख-दुःख, मंगल-अमंगल व जीवन-मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू की भांति हैं। जब भी आप इनमें से किसी एक को पा लेते हैं तो दूसरे पहलू की तैयारी उसी समय से चालू हो जाती है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने कामनाओं को छोड़ने की बात की है। कामनाओं को छोड़ने से मनुष्य ना तो सुख में उछलने लगता है और ना ही दुःख के समय रोने लगता है। इस स्थिति को भगवद् गीता में स्थिरप्रज्ञ कहा गया है। हमें भी जीवन में कामनाओं के पीछे नहीं भागना चाहिए और ऐसा करने से हमें जीवन में हल्कापन महसूस होता है और हम धीरे-धीरे मुक्ति (लिबरेशन) की ओर बढ़ने लगते हैं। वास्तव में मुक्ति जीवन का अंतिम उद्देश्य है।

44. ऋषियों द्वारा उपदेश संख्या 4 (Sermon number 4 by sages): जैसे वर्षा का जल पेड़-पौधों पर एक समान गिरता है परंतु किसी के लाल फूल निकलते हैं और किसी के पीले। इसी प्रकार एक ही विद्या का भिन्न-भिन्न प्राणियों पर उनके संस्कार व भाव के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। इस उपदेश में यह समझने को मिलता है कि हमारे अंतःकरण में सबसे पहले मन द्वारा विचार उत्पन्न किए जाते हैं इसके परिणाम से कर्म होता है कर्म के परिणाम से हमें अनुभव होता है तथा इस अनुभव की छाप संस्कार के रूप में हमारे चित्त पर पड़ जाती है। इसी प्रकार हर मनुष्य का अंतःकरण अलग-अलग प्रकार का होता है। हर मनुष्य ज्ञान की विवेचना अपने अंतःकरण में व्याप्त संस्कारों के आधार पर करता है।

45. ऋषियों द्वारा उपदेश संख्या 5 (Sermon number 5 by the sages): पत्थर पर लिखे अक्षर कभी नहीं मिटते परंतु पानी पर लिखा क्षण भर भी नहीं रहता। मन में क्रोध व शत्रुता को उतनी ही देर रखना चाहिए जितना पानी पर लिखा रह सकता है। इस उपदेश से हमें यह सीख मिलती है कि हमारा अंतःकरण बच्चों की भांति निर्मल होना चाहिए जिस प्रकार एक बच्चा किसी के प्रति दुर्भाभाव नहीं रखता उसी प्रकार हर मनुष्य को सरल होना चाहिए।

46. ऋषियों द्वारा उपदेश संख्या 6 (Sermon number 6 by the sages): आप धन के बदले कुछ और भी दे सकते हो, एक प्यार भरा शब्द या प्यार भरी मुस्कान, उसका मोल तो धन से भी अधिक है। इस उपदेश में बहुत ही अनमोल शिक्षा मिलती है। आवश्यकता इस बात की नहीं है कि हम किसी की धन से मदद करें अगर हम किसी व्यक्ति को मधुर शब्द व मधुर मुस्कान भी दे देते हैं तो यह भी मानवता के प्रति एक बड़ी सेवा है। यह तभी संभव हो पाता है जब हम कामनाओं पर विजय प्राप्त कर स्थिरप्रज्ञ बन जाते हैं। कामनाओं के पूर्ण होने से हमारे जीवन में लोभ बढ़ने लगता है तथा कामनाओं के पूरा ना होने से जीवन में क्रोध उत्पन्न होने लगता है।

47. ऋषियों द्वारा उपदेश संख्या 7 (Sermon No. 7 by the sages): हर प्राणी भगवान का अवतार है। परंतु वह अपनी ही माया के जाल में फंसकर अपने आपको नहीं पहचानता। स्वयं को पहचानने से ही वह इस माया जाल से मुक्त हो सकता है। इस उपदेश से हमें यह सीख मिलती है कि हमारे जीवन का सबसे बड़ा प्रश्न एक ही है और वह यह है कि '**मैं कौन हूं?**' जब इंसान स्वयं को जानने के रास्ते पर आगे बढ़ता है तब वह अंत में समझ जाता है कि मैं एक आत्मा ही तो हूं और ईश्वर के रूप में परमात्मा के जीवन काअंश मात्र ही तो हूं। कभी-कभी हम यह सोचने को विवश हो जाते हैं कि आखिर क्यों मनुष्य जीवन के इस सबसे बड़े ज्ञान को जीवनभर नहीं जान पाता।

48. सच्ची मित्रता स्वार्थ की सीमा से परे ही होनी चाहिए (True friendship should be beyond the limits of selfishness)

श्रीराम व लक्ष्मण जी हनुमानजी की सहायता से ऋष्यमूक पूर्ववत लांघकर सुग्रीव से मित्रता का हाथ बंटाने आते हैं। तब जामवंत कहते हैं कि ''हमने हनुमानजी के मुख से पहले ही आपकी दुविधा सुन ली है। हम आपको पूर्ण विश्वास दिलाते हैं कि हम अपने वानरों की सहायता से आपकी भार्या सीता माता को ढूंढ लेंगे। परंतु उससे पहले हम आपसे अपेक्षा भी रखते हैं कि आप हमारे महाराज सुग्रीव को उनके बड़े भाई 'बाली' से बचाएंगे क्यांकि उन्होंने हमारे महाराज की स्त्री व उनका राज्य दोनों ही छीन लिया है।'' यह कथन सुनकर श्रीराम इंकार कर देते हैं और कहते हैं कि ''क्षमा करें! मैं उनकी इस तरह सहायता नहीं कर सकता। ऐसा तो कोई छोटा व्यापारी ही बोल सकता है कि पहले आप मेरी सहायता करें और फिर मैं आपकी। हम महाराज सुग्रीव से राजनीतिक संबंध नहीं रख सकते क्योंकि राजनीति स्वार्थ से भरी हुई है।'' इस पर जामवंत क्षमा याचना करते हैं तथा कहते हैं कि ''हमें फिर वह रास्ता बताइये जिससे हम वानर-मनुष्यों से संबंध बन सकें।'' इस पर श्रीराम कहते हैं कि ''वह एक ही रास्ता है, जो योनियों, जातियों, लोगों, धर्मों और समस्त ऊंच-नीच को लांघकर एक प्राणी का दूसरे प्राणी के साथ अटूट संबंध स्थापित कराते है और वह नाता 'मित्रता' का है। महाराज मैं आपसे वह नाता जोड़ना चाहता हूं जिसमें कोई शर्त नहीं होगी, कोई लेन-देन नहीं होगा, ना ही कोई विनती, जो स्वार्थ की सीमा से परे होगा और जिसमें सिर्फ एक ही वस्तु का आदान-प्रदान होगा, जो है 'प्रेम'। इस दृश्य से हमें पता चलता है कि जब किसी संबंध में लेना व देना शामिल हो जाता है तो उसे **'व्यापार'** या **'राजनीति'** कहते हैं। वास्तव में सच्ची मित्रता का आधार निश्चल प्रेम होना चाहिए। निश्चल प्रेम की परिभाषा मूल रूप से अपने प्रियजन को देने की भावना पर आधारित होती है। देखिये ना, हमारे जीवन में सामान्यतः बहुत से दोस्त बने और फिर दोस्ती टूट गई। आईयें सोचें कि क्यों हुआ होगा ऐसा? वास्तव में यह सभी रिश्ते स्वार्थ की भावना से बनाए गए थे और इनमें अपेक्षा का भाव रहा होगा। हमारे प्रतिदिन के जीवन में भी वो ही रिश्ते टिकाऊ रह पाते हैं जो देने की भावना या यूँ कहें कि प्रेम पर आधारित नहीं होते हैं।

49. आशावान व्यक्ति ही विजयश्री को प्राप्त करता है (Only an optimistic person can be victorious)

सुग्रीव श्रीराम व लक्ष्मण से भेंट कर रहे होते हैं। वे कहते हैं कि ''बाली मुझे मारने के लिए किसी ना किसी को भेजता रहता है, जब आप यहां आये तो हमें लगा कि बाली ने ही आपको भेजा है। इसलिए हमनें हनुमान को दूसरा रूप धारण कर भेजा था। इस पर लक्ष्मण कहते हैं कि ''यह अवस्था तो बड़ी विषम है। क्योंकि जब कोई पुरूष हिम्मत हारकर इस प्रकार निरुत्साहित हो जाता है तब उसके जीवन में हर घड़ी एक भय, एक आशंका के स्वर गूंजते रहते हैं कि उसमें कभी पौरूष, साहस और पुरूषार्थ का भाव उदय नहीं हो सकता। ऐसा पुरूष कभी विजयी नहीं हो सकता। जो विजयी होने का सपना ही नहीं देखे वह युद्ध कैसे जीतेगा? शास्त्र भी यह ही कहते हैं कि शोक और संकट में अर्थात प्रजातंत्रकारी भय के उपस्थित होने पर जो अपनी बुद्धि से दुःख निवारण का उपाय सोचता है, धैर्य धारण करता है, वह मनुष्य ही दुःख पर विजय पाता है।'' इस पर सुग्रीव कहते हैं कि ''हाँ! आप दोनों के आने से मेरे मन में वापस आशा का संचालन हुआ है।'' इस पर श्रीराम अपनी सहमति प्रस्तुत करते हैं तथा कहते हैं कि ''आशा को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। जो आशा करता है वह सदैव जीतता है।'' इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए प्रायः चार बातों की आवश्यकता होती हैं, और वह हैं - **आशा, योजना, कर्म तथा कर्मफल का त्याग**। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन चारों चरणों में सबसे पहली आवश्यकता 'आशावान' होने की ही है। जब हम निराश होकर कार्य करने लगते हैं तो हमारे मन में भय व्याप्त हो जाता है और इसी कारण हमें अपने मित्रों में भी शत्रु दिखने लगते हैं। आईये, जरा सोचें कि सुग्रीव-बाली के साथ युद्ध में क्यूँ हार जाते थे तथा सुग्रीव की शक्ति बाली के सामने आधी क्यूं हो जाती थी? हम इसे आसानी से देख सकते हैं कि सुग्रीव की सोच निराशावादी है जबकि बाली की सोच आशा से भरी है। व्यावहारिक जीवन में भी निराशावादी सोच वाले व्यक्ति की शक्ति बहुत कम हो जाती है जो कि असफलता का मुख्य कारण बनती है। निराशावादी व्यक्ति मन ही मन भयग्रस्त रहता है। भगवान श्रीराम व लक्ष्मण सकारात्मकता से ओत-प्रोत हैं, उनका संग पाकर सुग्रीव में भी सकारात्मक ऊर्जा जाग गई है और वह आशावान हो गया है। इसलिए हमें भी अगर अपने जीवन में आशा के दिव्य गुण को धारण करना हो तो हमें सकारात्मक व्यक्तियों का संग करना होगा तथा नकारात्मक व्यक्तियों से दूरी बनानी होगी।

50. वही आदर्श राजा है जिसका मन सन्यासी हो गया है (The ideal king is one who has become a monk by heart)

सुग्रीव अपने भाई बाली की मृत्यु की वजह से दुःखी है। यह स्थिति देखकर हनुमानजी कहते हैं ''श्रीराम, महाराज सुग्रीव इस समय अत्यंत शोक अवस्था में हैं, आप इन्हें सांत्वना दीजिये।'' इस पर श्रीराम कहते हैं कि ''मित्र! यहां क्या कर रहे हो?'' इस पर सुग्रीव कहते हैं कि ''प्रभु! अपने

भाई को मारने के बाद राजा बनना मेरी आत्मा स्वीकार नहीं करती। मन तो करता है कि यह राज्य छोड़कर सन्यासी बन जाऊं।'' इस पर श्रीराम कहते हैं कि ''जो तुम अभी कह रहे हो, वह इस समय बोलना सर्वथा उचित है। मित्र ! इस समय में तुम जो अवस्था में हो, उसे श्मशान वैराग्य कहते हैं। जब किसी का प्रिय परिजन या मित्र मृत्यु को प्राप्त होता है, उस समय हर किसी में यह वैराग्य की भावना उत्पन्न होती है। परंतु यह अनंतकाल तक नहीं रहती, थोड़े ही दिनों में वह फिर इस दुनियां के मोह-माया में फंस जाता है। इसलिए बुद्धिमान अपने वैराग्य के कारण अपने कर्त्तव्य नहीं भूलते। वही आदर्श राजा है जो मन से सन्यासी हो। जिसे राज्य का लोभ न हो वही सच्चा राज कर सकता है।'' इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि एक आदर्श राजा का सबसे दिव्य गुण वैरागी मन है। जो राजा मन से वैराग्य भाव रखता है वही राजा जन कल्याण में रूचि रखता है अन्यथा राजा आसक्त (attachment) होकर स्वकेन्द्रित हो जाता है और उसके अधीनस्थ सारे कर्मचारी भ्रष्टाचारी हो जाते हैं। हम हमारे देश के इतिहास को जब देखते हैं तो **सम्राट अशोक** कलिंग युद्ध में भयानक रक्तपात को देखकर वैरागी हो गये थे और इसी कारण कलिंग युद्ध उनके जीवन का अंतिम युद्ध बन गया था। इसके बाद सम्राट अशोक एक आदर्श राजा के रूप में जनकल्याणकारी कार्यों में लिप्त हो गये थे। इसी प्रकार वर्तमान में हम देखते हैं कि हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री **श्री लाल बहादुर शास्त्री** एवं पूर्व राष्ट्रपति **ए.पी.जे. अब्दुल कलाम** दोनों ही मन में वैरागी भाव रखते थे और इसी कारण जन-जन के प्रिय नेता थे।

51. कार्य की सफलता के लिए उस कार्य के अनुरूप पहले उचित माहौल बनाया जाना चाहिए (For the success accomplishment of a work, proper environment should be created)

हनुमानजी द्वारा रावण के पुत्र अक्षय कुमार मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। हनुमानजी को पकड़ने के लिए रावण अपने पुत्र इन्द्रजीत को भेजते हैं। इन्द्रजीत द्वारा ब्रह्मास्त्र छोड़ा जाता है। ब्रह्मास्त्र का मान रखने के लिए हनुमानजी अपने आपको उसमें बांध लेते हैं। जब इन्द्रजीत हनुमानजी को रावण के पास लेकर आते हैं तब महाराज रावण उनसे अपने सुंदर उपवन को उजाड़ने का कारण पूछते हैं और यह भी पूछते हैं कि उसने क्यूँ वहां की रक्षा करने वाले राक्षसों को मारा? तब हनुमानजी लंकापति रावण को बतलाते हैं कि ''अपने शरीर को स्वस्थ रखना और उसकी रक्षा करना प्राणी का पहला धर्म है। इसी धर्म के अनुसार जब प्राणी भूखा हो और उसके सामने खाने का पदार्थ हो तो उसे खा लेना ना तो धर्म के विरूद्ध है और ना ही नीति के। मैनें उन्हीं सैनिकों को मारा जिन्होंने मुझ पर प्रहार किया, उन्हें नहीं मारा जो मुझे हानि नहीं पहुंचाना चाहते थे।'' इस दृश्य से हमें यह देखने को मिलता है कि हनुमानजी ना सिर्फ राम के परम भक्त हैं बल्कि उनमें वाक् चातुर्य की क्षमता भी जबरदस्त है। हनुमानजी यह जानते हैं कि उन्हें श्रीराम के पक्ष में किस तरह का माहौल बनाना है। उन्होंने वो सब किया जिससे रावण के सैनिकों में डर का माहौल बन जाए। रावण भी यह सोचने को मजबूर हो गया कि श्रीराम का एक सैनिक जब इतना चतुर व शक्तिशाली है तो श्रीराम की सम्पूर्ण सेना कैसी होगी? हर कुशल प्रबंधक को किसी भी कार्य करने से पहले उस कार्य के अनुरूप माहौल बनाना चाहिए।

52. अंतर्रात्मा की आवाज को सुनना (Listen to the inner voice of soul)

मंदोदरी द्वारा लंकापति रावण को समझाया जा रहा है कि अगर आप कुछ बुरे या अनुचित कार्य करते हैं तो स्वयं भगवान आपको बार-बार उस गलत कार्य न करने के लिए संकेत देते हैं। इस दृश्य में मंदोदरी रावण को समझाती है कि उसकी अंतर्रात्मा उसे बार-बार संकेत दे रही है कि जो कार्य इस दौरान चल रहा है वह गलत है। वह रावण को समझाती है कि सबकी अंतर्रात्मा गलत कर्म करने पर उसे अवश्य चेतावनी देती है, परंतु अपने अहंकार व जय जयकार में वह आवाज सुनकर भी नजरअंदाज कर देता है। गलत कार्य करने से मन अशांत भी रहता है। इस दृश्य से हमें यह समझने को मिलता है कि हर मनुष्य के पास निर्णय लेने के लिए मन, बुद्धि व अंतर्रात्मा होती है। मन मनुष्य को विभिन्न विकल्प उपलब्ध कराता है। बुद्धि इन सभी विकल्पों पर फैसला करती है। इंसान का आत्मविश्वास धीरे-धीरे कृतज्ञता से अकृतज्ञता की तरफ बढ़ने लगता है और यही आत्मविश्वास धीरे-धीरे अहंकार में बदल जाता है। मनुष्य ऐसा होने पर अपने अंतर्रात्मा की आवाज को सुन ही नहीं पाता। हर मनुष्य को चाहिए कि वह सदैव कृतज्ञता के गुण से परिपूर्ण रहे ताकि ना सिर्फ अहंकार जैसे दुर्गुण से बच सके बल्कि स्वयं की अंतर्रात्मा की आवाज को भी सुन सकें।

53. सही निर्णय कैसे लें ? (How to take the right decision?)

दूत के द्वारा रावण को पता चल जाता है कि श्रीराम, राजा सुग्रीव व वानर सेना लंका में स्थित नदी के उस पार पहुंच चुकी है। तब वह एक राज्यसभा आरम्भ करते हैं। जब सारे मंत्री रावण के निर्णय की ओर अपनी सहमति रखते हैं तब विभीषण कहते हैं कि ''जो मंत्रीगण, सेनागण अपने निजी लाभ के लिए राजा के हाँ में हाँ मिलाए, उस राजा का विनाश दूर नहीं होता, आप मेरे ज्येष्ठ भ्राता हैं, कभी-कभी काम और क्रोध की

उत्तेजना के आवेश में कुमति मनुष्य को गलत राह पर खींच कर ले आती है और अपनी भूल का उसी क्षण सुधार लेना ही बुद्धि का काम होता है।'' इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि हमें सदैव स्वार्थी मित्रों, कर्मचारियों व सलाहकारों से बचना चाहिए क्योंकि वह हमें खुश करने के लिए हमारे हर फैसले में हाँ में हाँ मिला देते हैं। इस कारण हमारे गलत निर्णय ठीक नहीं हो पाते। दूसरी ओर हमें यह देखने को मिलता है कि श्रीराम अपना निर्णय लेने से पूर्व अपने आसपास के सभी महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से विचार विमर्श करते हैं। ऐसा करने से निर्णय के परिणाम से होने वाले लाभ व हानि का आंकलन करना आसान हो जाता है। इसके अतिरिक्त हमें यह भी सीखने को मिलता है कि जब कभी कामनाओं व क्रोध के कारण गलत निर्णय हो जाए तो क्षमा माँगकर उन्हें सुधार लेना चाहिए। अगर अहंकार के कारण ऐसा नहीं करते तो हमें इन निर्णयों के परिणामस्वरूप भयंकार हानि उठानी पड़ती है।

54. निर्णय का आधार 'वास्तविकता' होनी चाहिए 'पूर्वाग्रह' नहीं (The basis of decision should be 'reality' and not 'prejudice')

नल-नील द्वारा महाराज सुग्रीव को पता चल जाता है कि आकाश मार्ग द्वारा विभीषण व अन्य लोग समुद्र तट पर खडे हैं। महाराज सुग्रीव यह सूचना श्रीराम के पास लेकर जाते हैं और जब श्रीराम दूसरों की सलाह मांगते हैं तब जामवंत कहते हैं कि 'छोटा भाई हो या गुप्तचर, है तो हमारा शत्रु ही।' वह कभी भी हमारी हानि कर सकता है, आखिर है भी राक्षस जाति का।'' तब हनुमानजी कहते हैं कि, ''अगर वह राक्षस जाति का है, इसलिए दुष्ट होगा यह मानना तो अन्याय है, कोई भी प्राणी जाति से बड़ा नहीं होता वह तो अपने कर्मों द्वारा अच्छा व बुरा सिद्ध होता है।'' इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि पूर्वाग्रह के आधार पर कोई निर्णय नहीं लिया जाना चाहिए। निर्णय लेने से पूर्व वास्तविकता को भली-भांति जांच परख लेना चाहिए। साथ ही साथ यह भी समझ रखनी चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की परख उसकी जाति के आधार पर नहीं की जानी चाहिए। व्यक्ति की परख उसके कर्म के आधार पर की जानी चाहिए।

55. भौतिक सुख, स्वभाव से ही नाशवान होते हैं (Materialstic pleasures are transitory)

रावण के गुप्तचर 'शुक' एक पक्षी का रूप धारण कर लंका के समुद्र तट पर लगे शिविर तक पहुचते हैं और महाराज सुग्रीव के पास पहुंचकर रावण से मित्रता का प्रस्ताव रखते हैं। 'शुक' कहते हैं कि ''आप रावण की मित्रता का आदर करें वह आपको इतना सुख देंगे कि आप सुख भोगते-भोगते थक जाओगे, परंतु वे सुख कभी कम नहीं होंगे।'' इस पर महाराज सुग्रीव कहते हैं कि ''प्राणी ही नाशवान है तो फिर भोग भी नाशवान ही होंगे। कोई भौतिक सुख ऐसा नहीं है जो निरंतर हो जिसका नाश न हो। इसलिए सुखों के मोह में आकर अपने कर्त्तव्यों से विमुख नहीं होना चाहिए।'' इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर व नाशवान है और इस शरीर के लिए किए जाने वाले साधन भी नाशवान स्वभाव के हैं। इसलिए यह बुद्धिमता है कि मनुष्य अपने कर्त्तव्य के लिए सुख व साधनों के कारण कभी भी कोई समझौता ना करे।

56. विनम्रता वीरों का आभूषण है (Humility is the ornament of the brave)

इस दृश्य में श्रीराम विभीषण से समुद्र को लांघने के लिए सहायत मांगते हैं। तब विभीषण कहते हैं कि ''क्यूँ ना हम समुद्र से ही मार्ग मांगे?'' तब लक्ष्मण भी कहते हैं कि ''हाँ भैया, हम समुद्र से ही मार्ग मांगते हैं। परंतु मैं मांगने का समर्थन नहीं करता, उठाइये धनुष-बाण!'' इस पर श्री राम कहते हैं कि ''दूसरे को अवसर दिये बिना ही, उसके विरूद्ध शस्त्र उठाना अहंकार जनित अत्याचार का सूचक है। सच्चे शक्तिशाली को अपनी विनम्रता कभी नहीं खोनी चाहिए।'' इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि मनुष्य को विनम्रता का आचरण नहीं खोना चाहिए। वास्तव में मनुष्य की विनम्रता को देखना हो तो यह देखें कि वह अपने से कमजोर व्यक्तियों के साथ कैसे पेश आता है।

57. धर्म व प्रलोभन (Religion and Temptation)

हमने यह देखा कि रावण द्वारा सुग्रीव से मिलने के लिए दूत भेजा गया। दूत द्वारा सुग्रीव को विभिन्न तरह के प्रलोभन दिए। दूत को रावण द्वारा प्रस्तावित विभिन्न भौतिक सुखों का सुग्रीव को प्रलोभन देकर रावण की शरण में आने की बात कही जाती है। इस समय सुग्रीव द्वारा बहुत ही अच्छा जवाब दिया गया। सुग्रीव ने कहा ''क्या मैं मृत्यु के समय अपने भाई बाली को दिए गए वचन को भूल जाऊं।'' इसके अलावा सुग्रीव ने भौतिक सुख से अधिक महत्व धर्म को दिया। इस प्रकार सुग्रीव ने रावण के प्रलोभन को नकार दिया। आज के परिवेश में इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि हमें भी बाहरी चकाचौंध व प्रलोभन में नहीं आना चाहिए क्योंकि आत्मिक सुख ही सबसे बड़ा सुख है। आत्मिक सुख की प्राप्ति धर्म के रास्ते पर चलने से ही प्राप्त होती है।

58. सलाह व सोच (Advice and Thoughts)

राम व संपूर्ण वानर सेना दक्षिण में समुद्र तट के समीप पहुंच गई, विशाल सागर को सामने देखकर राम लक्ष्मण व संपूर्ण वानर सेना सोच में पड़ जाती है। ऐसे समय विभीषण राम और लक्ष्मण को समुद्र से रास्ता मांगने की सलाह देते हैं। लक्ष्मण को यह सलाह पसंद तो आती है परंतु लक्ष्मण सूर्यवंशी होने की बात कहकर यह बोलते हैं कि मांगना कायरों का काम होता है। इस पर राम अपनी असहमति व्यक्त करते हुए समुद्र देव से प्रार्थना करने की बात कहते हैं। इससे हमें यह सीख मिलती है कि कोई भी कार्य विनम्रता व आग्रह से किया जाना चाहिए। आवेश व अधिकार की भावना से किया गया कार्य सही नहीं होता। राम व संपूर्ण वानर सेना समुद्र देव से 3 दिन तक विनम्रता से आग्रह करती है।

59. मर्यादा, पंचतत्व एवं ईश्वर (Decorum, five elements and God)

राम द्वारा तीन दिवस तक निराहार रहकर समुद्र देव से प्रार्थना की जाती है। समुद्र देव द्वारा रास्ता नहीं दिए जाने पर राम क्रोधित होते हैं। राम क्रोधित होकर ब्रह्मास्त्र का संधान करते हैं। भयभीत होकर समुद्र देव प्रकट होते हैं तथा क्षमा याचना करते हैं। करुणामय भगवान राम समुद्र देव को क्षमा कर देते हैं क्योंकि समुद्र देव पंचतत्व की मर्यादाओं को बतलाते हैं तथा समुद्र देव जल के मूल स्वभाव के बारे में समझाते हैं। राम तुरंत पंचतत्व के रूप में जल की मर्यादा को समझ जाते हैं। इसके आगे जल देव वास्तुविद् नल नील की क्षमताओं के बारे में राम को अवगत करवाते हैं। यही स्थान आगे जाकर रामेश्वर धाम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इससे हमें यह सीख मिलती है कि विनम्र आग्रह के पश्चात भी अगर कोई ना समझे तो क्रोध भी आवश्यक हो जाता है। लेकिन क्रोध भी नियंत्रित होना चाहिए। राम का अपने क्रोध पर पूर्ण नियंत्रण है।

60. सम्मान व भक्ति (Respect and devotion)

राम सेतु का निर्माण कार्य आरंभ हो चुका है। राम ने शिवलिंग की स्थापना की। राम शिवजी की आराधना करते हुए कहते हैं कि हे शिव ! आप मेरे स्वामी हैं और जिन्हें मेरी भक्ति करनी है या मुझसे कुछ भी चाहिए तो उन्हें पहले शिव की आराधना करनी होगी। राम- शिवजी को आराध्य मानते हैं। राम शिवजी को स्वामी मानते हैं। राम शिव भक्त हैं और दूसरी तरफ देखिए ना शिवजी राम की आराधना करते हैं। राम बड़ी विनम्रता से शिव जी से आग्रह करते हैं कि आप मेरा आपके लिए नया नाम कृपया स्वीकार करें रामेश्वरम् और वह बताते हैं कि इसका तात्पर्य है राम के जो ईश्वर है वही रामेश्वरम् है। वहीं दूसरी ओर पार्वती जब शिवजी से पूछती हैं तो शिवजी कहते हैं कि रामेश्वरम् का तात्पर्य हैः राम जिसके ईश्वर हैं अर्थात शिवजी, राम को ईश्वर मानते हैं और राम शिव को ईश्वर मानते हैं इसे कहते हैं सम्मान। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हम कितने भी बड़े पद पर रहे लेकिन दूसरों को सम्मान देने का अवसर कभी नहीं छोड़ना चाहिए। हम देखते हैं कि सामान्यतया सभी राम मंदिरों में शिव जी की स्थापना की जाती है क्योंकि शिव भक्ति प्रदान करते हैं।

61. शरीर एक साधन है (Body is a medium)

रावण अशोक वाटिका में सीता के पास पहुंचते हैं। रावण सीता से छल करते हैं और सीता के समक्ष एक ढ़का हुआ थाल प्रस्तुत करते हैं। इस थाल को जब सीता के सम्मुख खोला जाता हे तो राम का कटा हुआ सिर इसमें होता है। यह देखकर सीता स्तब्ध रह जाती है पर सीता विचलित नहीं होती ऐसी विषम परिस्थिति में भी सीता कहती हैं कि शरीर तो एक साधन है और राम के साथ उनका संबंध सदियों पुराना है जो अनन्त काल तक बना रहेगा। सीता प्रेम की पराकाष्ठा को समझाती है लेकिन अहंकार और मोह-माया से भ्रमित रावण प्रलोभन देता है ओर कहता है कि मरने वाला मर गया किन्तु जो जीवित है उसका हाथ थाम लेना चाहिए। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें अवसरवादी नहीं होना चाहिए हमें जीवन में निश्चित सिद्धांतों पर चलना चाहिए और शरीर को एक साधन मात्र समझना चाहिए। जब हम शरीर को एक साधन मान लेते हैं तब हम निर्भय हो जाते हैं क्योंकि हमारा वास्तविक रूप तो आत्मा ही है।

62. प्रभावशाली संप्रेषण (Effective communication)

राम लंका पहुंच गए हैं लंका पहुंचने के पश्चात राम धरती मां को प्रणाम करते हैं और उधर अशोक वाटिका में बैठी सीता को इसकी अनुभूति होती है। सीता भी धरती को प्रणाम करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभावशाली संप्रेषण के लिए भावनात्मक रूप से जुड़ना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है। जब हम भावनात्मक रूप से एक-दूसरे को महसूस करते हैं तो हम प्रभावशाली संप्रेषण करते हैं। इस प्रकार इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि प्रभावशाली संप्रेषण के लिए शब्दों व साधनों के इस्तेमाल से भी महत्वपूर्ण है कि बोलने वाला व सुनने वाला मन व भावना से एक हो जाए।

63. सही निर्णय के लिए पारस्परिक संबंधों को समझना आवश्यक है (It is necessary to understand interpersonal relationships for taking right decision)

शुक व शरण गुप्तचर बनकर लंका में राम की सेना का भेद लेने के लिए आते हैं। कुछ ही समय बाद विभीषण उनकी पहचान कर लेते हैं और उन्हें बंदी बनाकर राम के सम्मुख लाया जाता है। राम उन दोनों गुप्तचरों के साथ बड़े ही सहज दिखाई देते हैं और दूसरी तरफ लक्ष्मण व विभीषण गुप्तचरों को मृत्युदंड देने के पक्ष में बोलते हैं। लेकिन यहाँ राम का कहना है कि गुप्तचर वही कर रहे हैं जो उन्हें कहा गया है इस नाते उन्हें मृत्युदंड नहीं देकर, इन्हें मुक्त किया जाना चाहिए। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें पारस्परिक संबंधों में निपुण होना चाहिए। हमें सामने वाले व्यक्ति की मजबूरी को समझना चाहिए। सही निर्णय लेने के लिए मानवता को आधार बनाया जाना चाहिए। गुप्तचर की मृत्यु से कोई हल नहीं निकलता क्योंकि गुप्त चर ने वही किया है जो उसके स्वामी ने उसे कहा है। अगर हम हमारे व्यावहारिक जीवन में भी पारस्परिक संबंध यानि इंटरपर्सनल रिलेशनशिप को इतना महत्व दें तो हमारे जीवन में भी शांति, सुख व संतोष आ सकता है।

64. अति उत्साह से बचें (Avoid over enthusiasm)

रावण अपने किले पर खड़े होकर राम की सेना का निरीक्षण करते हैं और वहीं दूसरी ओर राम अपने शिविर से रावण की लंका एवं किले का निरीक्षण करते हैं। ऐसे में जब सुग्रीव को यह पता चलता है कि रावण उनके शिविर का निरीक्षण कर रहा है तो वे बड़े क्रोधित होते हैं और उसी क्षण रावण के पास पहुंचकर उससे युद्ध करने लग जाते हैं। सुग्रीव व रावण काफी देर तक युद्ध करते हैं और सुग्रीव को मुंह की खा कर वापस राम के पास आना होता है। राम मुस्कुराते हुए सुग्रीव को अति उत्साह से बचने का संदेश भी देते हैं। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें अति उत्साह के साथ जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। इससे कार्य बिगड़ जाता है। इस समय राम सेनापति है और राम की बिना आज्ञा लिए जाना अनुशासन के खिलाफ है। जब हम एक टीम के साथ होते हैं, तो हमें पूरी टीम को महत्व देना चाहिए। इस प्रकार अति उत्साह अक्सर हमें मुसीबत में डाल देता है।

65. अति आत्मविश्वास घातक होता है (Overconfidence is fatal)

मंदोदरी रावण को सलाह देती है। मंदोदरी अपने अनुभव के आधार पर हुए अपशकुन के आधार पर रावण को समझाती है कि राम से बैर ना करें। सीता को राम को सौंप देवे। युद्ध ना करे किन्तु रावण अपने ही कुतर्कों द्वारा मंदोदरी की सलाह को अस्वीकार कर देता है। मंदोदरी पत्नी होने के नाते पति के जीवन को लेकर चिंतित है। इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि अति आत्मविश्वास के कारण अक्सर हम अपने आसपास के लोगों को, हमारे शुभचिंतकों की बातों को नकार देते हैं। इसी तरह रावण अपने नाना मालयवत जी की सलाह को भी अस्वीकार कर देते हैं। विभीषण की सलाह को भी अस्वीकार कर देते हैं। इस प्रकार हमें यह पता चलता है कि रावण अति आत्मविश्वास से भरे हैं और अपना स्वयं का विनाश करने के लिए तत्पर है। माया का पर्दा रावण की आँखो को ढ़क देता है। अधर्म की राह पर चलने वाला रावण भले-बुरे के भाव को नहीं समझ पाता है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि विश्वास होना चाहिए, आत्मविश्वास होना चाहिए परंतु अति आत्मविश्वास अक्सर हमें अहंकारी बना देता है तथा हम स्वयं अपना नुकसान कर बैठते हैं। हमें सदैव अपने से बड़े, शुभचिंतकों व अनुभवी व्यक्तियों की बातों को महत्व देना चाहिए। यहाँ, यह भी देखने को मिलता है कि राम जहां अपने से अधिक अनुभवी व्यक्तियों कि राय को अस्वीकार करते जा रहे हैं वहीं अपने से कम उम्र के सेनानायक को तथा उनके पुत्र की बातों को स्वीकार भी करते जा रहे हैं।

66. युद्ध को हरसंभव टाला जाना चाहिए (War should be avoided by any means)

राम लंका में अपनी सजी हुई सेना का निरीक्षण कर रहे हैं। राम मन ही मन कुछ सोच भी रहे हैं और राम आशंकित भी हैं कि युद्ध के परिणाम से कितना विनाश होगा। ऐसी अवस्था में, कुछ समय बाद ही राम सबको चौंकाने वाली राय भी रखते हैं। यहाँ राम का कहना है, कि हमें शान्ति का प्रयास रावण के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। राम अंगद को शांति दूत बनाकर रावण के समक्ष भेजने का निर्णय लेते हैं।

इससे हमें यह सीख मिलती है, कि जहां तक संभव हो सके विवाद व युद्ध से बचना चाहिए क्योंकि इससे जन हानि होती है। युद्ध के कारण आम जन को हानि होती है तथा सेना में नियुक्त व्यक्तियों को भी अपने जीवन को खोना पड़ता है। जहां तक संभव हो सके इस तरह के नरसंहार, अशांति रूपी नकारात्मक वातावरण से बचने का प्रयास भी करना चाहिए।

67. वाक कौशल (Communication skill)

अंगद रावण के दरबार में प्रस्तुत होते हैं। रावण अंगद का उपहास करते हैं। रावण अंगद को बैठने के लिए आसन भी नहीं देते। अंगद ऐसी विशिष्ट

विषम परिस्थिति में भी अपने स्वामी के सम्मान को कम नहीं होने देते। अपने संवाद कौशल से रावण को शांति दूत के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह समझाते हैं। अपने स्वामी राम की अच्छी वकालत भी करते हैं। इतना उपहास होने के बाद भी अंगद प्रभावशाली तरीके से अपनी पूँछ को बढ़ाकर अपना आसन खुद बनाते हैं और रावण के समान उन्ही के समक्ष, उच्चतम आसन पर बैठ जाते हैं। इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि शत्रु हमें कितना भी कमजोर क्यो न समझे, हमें अपने संवाद कौशल से प्रभावशाली संप्रेषण के माध्यम से अपनी बात को बखूबी रखना आना चाहिए। सम्मान पाने के लिए संवाद कौशल का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इस प्रकार रावण,अंगद के संवाद कौशल को देखकर मन ही मन डर जाता है। इससे हमें यह सीख मिलती है एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के लिए प्रत्येक व्यक्ति में संवाद कौशल यानी कम्युनिकेशन स्किल होना अर्थात वाक् कला में निपुण होना चाहिए ताकि हम विषम से भी विषम परिस्थितियों में भी अपने वाक् चातुर्य से अपना व अपने स्वामी के सम्मान को बनाये रख सकें।

68. ईश्वर सर्वोपरि है (God is supreme)

रावण के ससुर मायासुर रावण को समझाते हैं। मायासुर कहते हैं कि शिव, ब्रह्मा व समस्त देवतागण राम के पक्ष में हैं। यह बात सुनकर रावण स्वयं को त्रिलोक विजेता बतलाता है। **इस पर मायासुर कहते हैं रावण तुम त्रिलोक विजेता हो पर राम त्रिलोक रचयिता है।** रावण इस बात का उपहास करते हैं। आज संधि प्रस्ताव की आखिरी रात है। इस प्रकार अपने ससुर मायासुर के काफी समझाने के बाद भी संधि प्रस्ताव की सलाह को ठुकरा देता है। इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि इस संसार में बहुत सी सफलताएं मिल जाने के पश्चात भी इस संसार के रचयिता को ही सर्वोपरि समझना चाहिए। जब ईश्वर को सर्वोपरि समझते हैं तो हम अहंकार के भाव से बच जाते हैं तथा कृतज्ञता के भाव में रहने लगते हैं।

69. अहंकार व स्वाभिमान में बहुत थोड़ा सा ही भेद है (There is a thin difference between ego and self-respect)

मंदोदरी रावण को संधि की आखिरी रात समझाती है। मंदोदरी कहती है सती नारी का मन बहुत ही कोमल होता है, परंतु सत्य धर्म के पालन में वह हिमालय के समान अविचल हो जाती है। नारी का हृदय बड़े से बड़े प्रलोभन में भी विचलित नहीं होता और इस प्रकार मंदोदरी रावण से विनती करती है कि वह अनावश्यक युद्ध में लंका को ना झोंके। वह यह भी कहती है कि नाथ अगर तुम चाहो तो दानवों की मृत्यु को आज की रात सही निर्णय लेकर जीवन की ओर मोड़ सकते हो। रावण मंदोदरी का उपहास करता है और वह अपनी क्षमताओं का बखान करता है। रावण का कहना है कि नवग्रह के सभी देव उनकी सेवा में खड़े रहते हैं। वह जिन्हें राम कह रही है वह तुच्छ वनवासी है। अंत में सभी प्रयास करने के बाद मंदोदरी रावण को अहंकार रूपी पट्टी को आंखों से हटाने को कहती है। रावण कहते हैं कि **यह मेरा अहंकार नहीं बल्कि यह मेरा स्वाभिमान है।** इस प्रकार हम यह देखते हैं कि स्वाभिमान धीरे-धीरे कब अहंकार बन जाता है, इंसान को पता ही नहीं चलता है। **जब किसी स्वाभिमान में कृतज्ञता ना हो तो यह हमें यह समझ लेना चाहिए कि अब यह अहंकार बन गया है।**

70. विजय धर्म की ही होती है (Truth is always victoriuos)

आज संधि प्रस्ताव की आखिरी रात है रावण की मां कैकसी रावण को समझाने के लिए आती है। कैकसी कहती है तुम्हारे दोनों भाई खर, दूषण और बहुत से राक्षस युद्ध में मारे जा चुके हैं। तुमने नाना की बातों को ना मानकर भी अच्छा नहीं किया। कैकसी कहती हैं कि रावण बेटे ! ''मैंने तुम्हें जन्म दिया है और मैं तुम्हारा शुभ चाहती हूं।'' रावण कहते हैं ''मैं नादान नहीं हूं, आपने मुझे जन्म जरूर दिया परंतु मैनें अपना भूत और भविष्य स्वयं तय किया है।'' कैकसी रावण को समझाती है कि दानव अधर्म के साथ हैं व देवता धर्म के साथ हैं और अंत में विजय धर्म के साथ रहने वालों की ही होती है। इतना समझाने के बाद कैकसी हटधर्मी रावण को युद्ध ना करने की सलाह देती है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि अंत में देर से ही भले पर जीत सत्य की ही होती है। अतः धर्म के रास्ते पर सदैव चलते रहना चाहिए।

71. दुश्मन की वीरता का भी सम्मान करें (Respect the bravery of the enemy as well)

सेनापति दुर्मुख की मृत्यु के पश्चात रावण के भाई खर का पुत्र मकराक्ष आता है। अपने पिता खर की मृत्यु का बदला लेने के लिए युद्ध में जाने के प्रस्ताव रखता है। रावण इसके लिए अपनी सहमति दे देते हैं। युद्ध भूमि में मकराक्ष पहुंचकर राम को युद्ध के लिए ललकारते हैं। राम युद्ध भूमि में स्वयं आते हैं तथा मकराक्ष का परिचय जानते हैं। अपने पिता की मृत्यु के कारण माता के संकल्प को पूरा करने के लिए की गई प्रतिज्ञा को वे बड़े सम्मान की नजर से देखते हैं। पुत्र के रूप में अपनी माँ से की गई प्रतिज्ञा का वे आदर करते हैं। लक्ष्मण मकराक्ष का उपहास करते हैं तथा यह कहते हैं कि यह तो कुछ ऐसे हुआ जैसे कोई चूहा शेर की गुफा के बाहर खड़ा होकर शेर को युद्ध के लिए ललकारे। इस पर राम कहते हैं कि वीरों का

उपहास करना वीरों का काम नहीं होता। इससे हमें यह सीख मिलती है कि दुश्मन की हर अच्छाई का भी सम्मान करना चाहिए। यही एक सच्चे वीर का गुण होता है। **अच्छाई का सम्मान करने से स्वयं में भी अच्छाई बढ़ने लगती है।**

72. भक्त व ज्ञानी में भेद है (There is a difference between a devotee and a knowledgeable person)

अपने भाई के बेटे मकराक्ष की युद्ध में मृत्यु के पश्चात रावण विचलित हो जाता है। रावण स्वयं युद्ध भूमि में आते हैं। युद्ध भूमि में आने के पश्चात रावण राम से कहते हैं कि तुम मूर्ख वानरों को अपनी वाक पटुता से बरगला सकते हो। क्योंकि वे अज्ञानी हैं। इस पर राम एक बहुत सुंदर जवाब देते हैं। राम कहते हैं ''भक्त व ज्ञानी में यही अंतर है एक ओर भक्त जहां सच्चा और सरल होता है भले ही वह अज्ञानी ही क्यों ना हो दूसरी ओर ज्ञानी अच्छा व बुरा हो सकता है। ज्ञानी दुराचारी भी हो सकता है।'' **इस समय राम रावण से यह भी कहते हैं की युद्ध लड़ने के लिए सिर्फ पाशविक शक्तियों से ही काम नहीं चलता बल्कि धार्मिक व आत्मिक शिक्षा की भी जरूरत होती है।** इससे हमें यह समझ मिलती है कि ज्ञानी से भक्त बड़ा है क्योंकि भक्त सरल होता है और उसे समझाना आसान होता है। जबकि ज्ञानी दुराचारी भी हो सकता है। गीता में भी भगवान कृष्ण भक्ति मार्ग को सर्वश्रेष्ठ व सरल मार्ग बतलाते हैं जहां ज्ञानी बुद्धि का इस्तेमाल करते हैं, वही भक्त अपने कोमल हृदय व सरल स्वभाव से ही ईश्वर को पा लेते हैं।

73. पहली जीत और पहली हार दोनों ही अंतिम नहीं हुआ करती (First victory and first defeat are never final)

रावण हताश व निहत्थे होकर वापस महल में लौटते हैं। निहत्थे व हताश रावण के सामने उनके नाना आते हैं। रावण के नाना रावण से कहते हैं कि मैं अब तुम्हें युद्ध ना करने की सलाह नहीं दूंगा। अब मैं तुम्हें यह कहूंगा कि तुम्हें पूरी क्षमता के साथ युद्ध करना चाहिए। वह रावण को प्रेरित करते हैं और रावण से कहते हैं कि पहली हार अंतिम हार नहीं हुआ करती है। हार और जीत के बीच में कई फासले होते हैं। इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि एक बार निर्णय लिए जाने के पश्चात उस पर स्थिर रहना चाहिए तथा निर्णय लेने के पश्चात अगर प्रारंभिक अवस्था में हार भी मिले तो उसे अंतिम हार नहीं समझना चाहिए। लगातार प्रयास करते रहना चाहिए। क्योंकि बहुत बार प्रारंभिक हार होने के बावजूद भी अंत में विजय होती है। दूसरी ओर कई बार प्रारंभ में विजय होने के बाद भी अंत में हार हो जाती है।

74. कर्म व अर्थ, धर्म के अधीन होने चाहिए (Actions and inference should be subordinate to Dharma)

कुंभकरण को नींद से जगाया जाता है और कुंभकरण नींद से जागने के बाद रावण के समक्ष प्रस्तुत होते हैं। कुंभकरण रावण से कहते हैं कि आप नारायण के रूप में श्रीराम को नहीं समझ पाए, रावण क्रोधित होते हैं। वे कहते हैं शत्रु को श्री से सम्बोधित मत करो। कुंभकरण इसका जवाब देते हैं कि आंख बंद करने से सूर्य का प्रकाश कम नहीं हो जाता उन्हें श्रीराम ही कहना होगा। इसके आगे कुंभकरण कहते हैं, अर्थ व कर्म जब धर्म के विपरीत हो वहां कर्म और अर्थ को त्याग देना चाहिए। वे आगे कहते हैं सुबह का समय धर्म का होता है, दोपहर का समय अर्थ का होता है और रात्रि का समय काम का होता है। इस प्रकार वे भली-भांति रावण को यह समझाते हैं कि धर्म सर्वोपरि है। अर्थ एवं कामनाएं धर्म सम्मत होनी चाहिए। इस दृश्य से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि सुबह का कार्य अच्छे विचारों का होना चाहिए, धार्मिक कार्यों का होना चाहिए दोपहर में अर्थोपार्जन पर ध्यान दिया जाना चाहिए तथा उसके पश्चात कामनाओं की पूर्ति पर ध्यान दिया जाना चाहिए। शास्त्रों में चार पुरुषार्थ बताए गए हैं धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष, इन चारों पुरुषार्थ में सबसे महत्वपूर्ण पुरुषार्थ है धर्म। धर्म का अर्थ है सही व गलत का विवेक। जब अर्थ उपार्जन व कामनाएं धर्म के अधीन होती हैं तब वह श्रेष्ठ होती है और इसी के द्वारा चौथे व अंतिम पुरुषार्थ के रूप में मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

75. राजा को चापलूस मंत्रियों से दूर रहना चाहिए (The king should stay away from sycophant ministers)

ावण को कुंभकरण पर क्रोध करते हुए दिखाया जाता है रावण कुंभकरण से कहते हैं यह समय शास्त्र संबंधित बातें करने का नहीं है। इसके आगे रावण क्रोधित होकर कुंभकरण से कहते हैं अगर तुम युद्ध में भाग नहीं लेना चाहो तो तुम वापस जाकर सो जाओ मैं स्वयं युद्ध कर लूंगा। इसके जवाब में कुंभकर्ण रावण से कहते हैं कि छोटे भाई के रहते हुए कभी बड़े भाई युद्ध में नहीं जाते। वे कहते हैं जो बातें मैंने कही हैं वह छोटे भाई होने के कारण मेरा अधिकार भी था और यह मेरा कर्तव्य भी था। इसके आगे वह यह भी कहते हैं कि छोटा भाई मित्र भी है और सेवक भी है। अपने बड़े भाई के लिए तो मैं मरने को भी तैयार हूं। कुंभकरण को आज रावण की यह स्थिति देखकर बड़ा दुख भी हो रहा है और एक छोटे भाई होने के नाते ऐसी परिस्थिति में जो कर्तव्य है उसको पालन करने की मर्यादा भी महसूस हो रही है। अंत में कुंभकरण कहते हैं कि जो मंत्री राजा की हां में हां मिलाते हैं वे मंत्री कभी राजा का भला नहीं कर सकते। इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि राजा को अपने दरबार में किए जाने वाले सभी

कार्यों में सलाहकारों की मदद लेनी चाहिए तथा ऐसे मंत्रियों से हमेशा दूर रहना चाहिए जो राजा की हां में हां मिलाते हैं। और राजा को सही निर्णय लेने नहीं देते।

76. क्या धर्म की परिभाषा देश व काल के अनुसार बदलती है? (Does the definition of religion change according to the country and time)

कुंभकरण युद्ध भूमि पर आते हैं। कुंभकरण का विशाल शरीर को देखकर राम की सेना में हाहाकार मच जाता है। राम सभी से सलाह करते हैं तथा यह निश्चय किया जाता है कि विभीषण कुंभकरण के पास जाकर उन्हें समझाएंगे। युद्ध भूमि में पहुंचकर विभीषण कुंभकरण को प्रणाम करते हैं। कुंभकरण अपने भाई विभीषण से मिलकर प्रसन्न होते हैं पर थोड़ी देर बाद वह विभीषण से रुष्ट होते हुए कहते हैं कि तुम अपने बड़े भाई का साथ ना देकर राम की शरण में गए। चाहे जैसी भी स्थिति रही हो तुम्हें रावण का ही साथ देना चाहिए था। धर्म की कोई निश्चित परिभाषा नहीं होती। धर्म की व्याख्या देश काल और परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती है। इसके उत्तर में विभीषण कहते हैं, सत्य सदा एक ही होता है सत्य ही धर्म होता है, सत्य ही शाश्वत होता है। इस समय कुंभकरण कहते हैं ऐसा समय आता है जब आदमी धर्म संकट में फंस जाता है और उस समय यह निश्चित करना बहुत ही कठिन हो जाता है कि प्राणी का क्या धर्म है और क्या कर्तव्य है। ऐसे ही अवसर पर प्राणी अपने संस्कारों के अनुसार ही अपने धर्म का निश्चय करता है। इस संवाद से हमें यह सीखने को मिलता है की धर्म की परिभाषा बहुत ही गूढ़ है तथा वह कभी भी बदलती नहीं है अधर्म प्रारंभ से अंत तक अधर्म ही रहता है और धर्म प्रारंभ से अंत तक धर्म ही रहता है। रिश्तों से अधिक महत्व धर्म को दिया जाना चाहिए क्योंकि अंत में विजय धर्म की ही होती है। शास्त्रों में बताए गए चारों पुरुषार्थ में धर्म का प्रतीक शेर को समझा गया है, उसे किसी की परिचय की आवश्यकता नहीं होती धर्म के अधीन ही अर्थ व काम शोभायमान होते हैं।

77. आत्मा का अंत नहीं होता शरीर का अंत होता है (There is no end to the soul, there is an end to the body)

अपने बड़े भाई कुंभकरण की मृत्यु के पश्चात विभीषण शोकमय हो जाते हैं। ऐसे समय श्री राम विभीषण को समझाते हैं ज्ञानी को कभी भी मरने वाले का शोक नहीं करना चाहिए। आत्मा का अंत नहीं होता शरीर का अंत होता है। आत्मा शरीर बदलती रहती है, इस जगत में पदार्थ व जीव सबका अंत होता है। इस प्रकार इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि आत्मा अमर है तथा जिसने भी जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है। जब मनुष्य को शरीर की नश्वरता व आत्मा की अमरता एवं स्वयं के जीवन का यह अनमोल ज्ञान हो जाता है तो वह निर्भय हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में कभी शोक भी नहीं होता।

78. अपने से छोटों पर विश्वास किया जाना चाहिए (The younger ones should be trusted)

विभीषण श्री राम, सुग्रीव एवं जामवंत को महा पराक्रमी अतिकाय की क्षमताओं के बारे में बताते हैं। वे कहते हैं कि अतिकाय कुंभकरण के समान अति शक्तिशाली है। राम को अपने अनुज भ्राता लक्ष्मण पर पूरा भरोसा है। दूसरी ओर विभीषण लक्ष्मण की क्षमता पर संदेह करते हैं। विभीषण कहते हैं कि लक्ष्मण के साथ किसी और को भी भेजा जाना चाहिए। इस पर राम अपनी असहमति प्रकट करते हैं। लक्ष्मण की वीरता के बारे में विभीषण को बतलाते हैं। लक्ष्मण की क्षमताओं पर उन्हें पूरा इत्मीनान है। इस दृश्य से हमें यह सीख मिलती है कि अपने छोटे भाइयों व परिजनों की क्षमताओं पर पूर्ण विश्वास किया जाना चाहिए। ऐसा करने से वे जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार करते हैं तथा आत्मविश्वास से भरे रहते हैं।

79. युद्ध की आवश्यकता ना होना ही मानवता की सबसे बड़ी जीत है (The absence of the need for war is the biggest victory of humanity)

विभीषण और राम युद्ध में मारे गए सैनिकों को देखते हैं तथा विभीषण बड़े विचलित होते हैं। युद्धभूमि शमशान के रूप में बदल गई है। जगह-जगह शव पड़े हैं और ऐसे में राम कहते हैं, मानवता की सबसे बड़ी जीत तब होगी जब सत्य व न्याय के लिए हमें युद्ध की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। वर्तमान में हम यह देखते हैं कि हर समय युद्ध का खतरा बना रहता है। आर्थिक विकास की दौड़ में हर देश दूसरे देश को हराना चाहता है। इसी कारण आणविक व जैविक हथियारों से भयानक युद्ध की तैयारी विश्वभर में हर समय की जा रही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि वास्तव में सच्ची जीत तब होगी जब इंसान धर्म को भलीभांति समझ जाएगा तथा धर्म के अधीन अर्थ काम आ जायेंगे। आज हम देखते हैं कि हर व्यक्ति को सत्य व न्याय के लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ रहा है।

80. कौनसा ऐसा रोग है जिसका इलाज नहीं (Which disease does not have any cure?)

मेघनाद अदृश्य हो जाते हैं तथा आकाश मार्ग से तीर से नागपाश को राम-लक्ष्मण पर छोड़ते हैं। नागपाश में राम-लक्ष्मण बंध कर मूर्छित हो जाते हैं। इससे सेना में शोक की लहर छा जाती है। ऐसे समय विभीषण एवं जामवंत निराश हो जाते हैं एवं वे नागपाश का कोई उपचार न होने की बात कहते हैं। ऐसे समय में सुग्रीव कहते हैं कि कौनसा ऐसा रोग है जिसका इलाज नहीं होता, कौनसा ऐसा अस्त्र है जिसकी कोई काट नहीं होती। इससे हमें यह सीख मिलती है कि कठिन से कठिन परिस्थिति में भी निराश नहीं होना चाहिए। सुग्रीव की भाँति इस बात पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए कि हर समस्या का एक निश्चित समाधान होता ही है। निराशा हो जाने की दशा में समस्या और गहरी हो जाती है।

81. संकट में दूरदर्शिता व उत्साह की शक्ति का उपयोग करें (Use the power of foresightedness and enthusiasm in times of crisis)

लंका युद्ध के दौरान मेघनाद द्वारा छोड़े गए नागपाश से बंधे राम-लक्ष्मण युद्ध भूमि में घायल अवस्था में मूर्छित पड़े हैं। विभीषण प्रलाप कर रहे हैं कि ''हे मेघनाद ! तूने क्या किया? राम-लक्ष्मण से पहले तुझे मुझ पर शस्त्र चलाना चाहिए था। अब इतिहास मुझे विश्वासघाती ही समझेगा।'' इसी प्रकार निराशा की बात जामवंत भी करते हैं। ऐसी विकट परिस्थिति में सुग्रीव रावण से बदला लेने की बात भी करते हैं। दूसरी ओर दूरदर्शी हनुमान विष्णु वाहन गरूड़ के पास नारद जी को लेकर पहुंच जाते हैं एवं गरूड़ जी को अपने मधुर भाष्य से राम-लक्ष्मण को नागपाश से मुक्त करने के लिए राजी कर लेते हैं। इससे हमें यह सीख मिलती है कि संकट के समय निराश नहीं होना चाहिए बल्कि आशावान रहना चाहिए। संकट के समय दूरदर्शिता व सूझबूझ से काम लेना चाहिए। जो व्यक्ति संकट के समय दूरदर्शिता रखते हैं वे ही अपनी टीम के पथ प्रदर्शक बनते हैं।

82. उत्साह व उमंग के द्वारा सकारात्मक ऊर्जा को बनाए रखना चाहिए (Positive energy should be maintained through enthusiasm and exuberance)

गरूड़ जी नागपाश के बंधन से राम-लक्ष्मण को मुक्त कर देते हैं। सूंपर्ण सेना में फिर से खुशी की लहर छा जाती है। राम व लक्ष्मण के नागपाश में बंधने के कारण ना सिर्फ राम की संपूर्ण सेना में दुःख व निराशा छा जाती है बल्कि अशोक वाटिका में बैठी त्रिजटा व सीता भी शोकमय हो जाते हैं। ऐसे में उत्साहित सुग्रीव व हनुमान श्रीराम से जयनाद घोष के लिए प्रार्थना करते हैं जिससे अशोक वाटिका में बैठी सीता माता को भी संदेश मिल जाये। राम की अनुमति के बाद जयनाद घोष किया जाता है। युद्ध भूमि में व्याप्त नकारात्मकता जयनाद के कारण सकारात्मक शक्ति में बदल जाती है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि कठिन परिस्थितियों में भी अपने टीम का मनोबल बढ़ाने के लिए उत्साह व उमंग की शक्ति का प्रयोग किया जाना चाहिए।

83. मित्रता जाति के आधार पर नहीं निभाई जाती (Friendship is not maintained on the basis of caste)

राम व रावण युद्ध भूमि में है। रावण अपनी प्रशंसा खुद ही कर रहा है। इस पर राम कहते हैं दुनिया में 3 प्रकार के प्राणी पाये जाते हैं। पहले वो जो सिर्फ कहते हैं, दूसरे जो कहते हैं और करते हैं एवं तीसरे जो सिर्फ करते हैं। राम कहते हैं हे रावण ! तुम सिर्फ बड़ी-बड़ी बातें करते हो। इसके बाद जब रावण ने विभीषण पर दिव्य शक्ति छोड़ी तब राम ने उसे अपने ऊपर ले लिया। इस पर भावुक होकर विभीषण जी ने श्रीराम से कहा- मैं तो तुच्छ प्राणी हूं, राक्षस जाति का हूं। तब राम ने कहा मित्रता जाति के आधार पर नहीं की जाती। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें बड़-बोले स्वभाव से बचना चाहिए तथा एक सच्चे मित्र को मुसीबत में अपने मित्र का बेहिचक साथ देना चाहिए। मित्र धर्म का जाति कोई आधार नहीं होती है।

84. जो होता है अच्छे के लिए होता है (Whatever happens, happens for the good)

जब लक्ष्मण श्रीराम से यह कहते हैं कि सब कुछ मेरी वजह से हो रहा है। अगर उस दिन मैं सीता माता को अकेला छोड़कर नहीं जाता तो ऐसा नहीं होता। इस पर श्रीराम कहते हैं जो होता है अच्छे के लिए होता है। अगर ऐसा नहीं होता तो हम ऋषि-मुनियों को राक्षसों से भला कैसे मुक्त करा पाते तथा अधर्म का नाश नहीं हो पाता। इससे हमें यह सीख मिलती है कि कभी-कभी जीवन में मुसीबतें आती हैं। ऐसी दशा में हम दुःखी होकर ईश्वर को याद करने लगते हैं। समय व्यतीत होने के बाद हमें यह पता चलता है कि उसी मुसीबत के कारण हमारे जीवन में उन्नति हुई थी। इसलिए हमेशा यह बात हमारे ज़हन में रहनी चाहिए कि जो भी होता है अच्छे के लिए होता है।

85. अगर कर्म-धर्म के अनुसार किया जाये तो ईश्वरीय शक्ति भी आपकी मदद करती है (If the work is done according to the virtue, then the divine power also helps you)

इंद्र देवता अन्य सभी देवताओं से राम व रावण के युद्ध के बारे में बात कर रहे हैं। इंद्र कहते हैं कि यह युद्ध बराबरी का नहीं हो रहा। इसे बराबर का करने के लिए श्रीराम को भी रथ देना पड़ेगा। तब ब्रह्माजी इंद्र को अपना रथ श्रीराम को देने की आज्ञा देते हैं। इससे साफ दिखता है कि श्रीराम धर्म के साथ थे तो देवता भी उनकी सहायता कर रहे थे। इससे हमें यह सीख मिलती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करना चाहिए। ऐसा करने से प्रकृति व ईश्वर उस कार्य को पूर्ण करने में मदद करते हैं।

86. अत्याचार तो अत्याचार ही रहता है चाहे कितनी ही वीरता से करें (Atrocities remain the same no matter how bravely they are done)

मंदोदरी रावण से कहती है कि मेरे पास एक विचार है जिससे दोनों की हार नहीं होगी और वह है 'संधि'। इसके जवाब में रावण कहते हैं कभी-कभी लगता है कि तुम रावण की पत्नी कहलाने योग्य नहीं हो। तुम्हारे अंदर वीरता की एक झलक तक नहीं दिखती। तब मंदोदरी कहती है कि 'वीरता' शब्द ओढ़ लेने से आदर नहीं मिल जाता है। यदि प्राणी धर्म के लिए लड़ता है तो वह दोनों ही दशा में वीर कहलाता है, चाहे वह जीत जाये या मर जाये। परंतु जब अधर्म के लिए लड़ता है तब वह जीतने के बावजूद भी अत्याचारी ही कहलाता है और यदि वह हार जाये तो लोग कहते हैं उसे उसके कर्मों का दण्ड मिल गया। इससे हमें यह सीख मिलती है कि अत्याचार व वीरता में भेद होता है। अत्याचार के परिणाम से अपयश मिलता है चाहे उसे कितनी ही वीरता से क्यों नहीं लड़ा जाये।

87. अहमता का परमात्मा में विलय (The merger of ego in the divine)

जब श्रीराम के बाणों द्वारा रावण की मृत्यु होती है उस समय रावण के मुख से श्रीराम निकलता है। जो रावण हर किसी को राम के नाम के आगे श्री लगाने से रोकता रहा, वही रावण आज अपने अंतिम समय में श्रीराम का उच्चारण करते हुए प्रभु की शरण में चला जाता है। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम संसार में चाहे कितने भी साधन जुटा लें व सफलताएं प्राप्त कर लें परंतु हमें ईश्वर को कभी नहीं भूलना चाहिए। ईश्वर का सदैव स्मरण करते रहने से हम ना सिर्फ अहंकार से बच जाते हैं अपितु हमारे जीवन में विनम्रता का गुण भी विकसित हो जाता है। अतः जीवन में विनम्रता को सतत् बनाए रखना चाहिए। विनम्रता के गुण से हम अहंकार रूपी दोष से स्वतः ही दूर हो जाते हैं।

88. जीत का श्रेय टीम को दें (Give credit of the victory to the team)

श्रीराम व रावण में घमासान युद्ध होता है और अंत में श्रीराम विभीषण की सलाह से रावण को मार गिराते हैं। लक्ष्मण श्रीराम को बधाई देते हुए कहते हैं कि रावण पर आपकी जीत हुई। इस पर श्रीराम कहते हैं ''जीत मेरी नहीं यह तो आप सबकी हुई है। यह लड़ाई हम सबने मिलकर जीती है।'' इससे हमें यह सीख मिलती है कि एक अच्छे लीडर को जीत का श्रेय संपूर्ण टीम को देना चाहिए।

89. श्मशान वैराग्य (Cremation is renunciation)

रावण की मृत्यु पर विभीषण भावुक हो जाते हैं। विभीषण कहते हैं कि अब मुझे लंका का राजा बनने की बिल्कुल इच्छा नहीं है। इस पर श्रीराम उन्हें कहते हैं कि हर मनुष्य की मृत्यु होती ही है। मृत्यु के समय परिजनों को जो शोक होता है वह कुछ समय का होता है जो कि धीरे-धीरे समय के साथ कम होता जाता है। ऐसी स्थिति को श्मशान वैराग्य कहा जाता है। इसके आगे वे रावण के पार्थिव देह के अंतिम संस्कार करने के लिए कहते हैं। इससे हमें यह सीख मिलती है कि प्राणी मात्र को शरीर की नश्वरता व आत्मा की अमरता को समझना चाहिए।

90. किसी की जमीन व सम्पत्ति बलपूर्वक हथियाना धर्म विरूद्ध है (Seizing someone's land and property by force is against morality)

रावण के मरने के बाद उनकी दोनों पत्नियां मंदोदरी व धन्यमालिनी शोकमय हो जाती हैं। इसी बीच रावण के नाना माल्यवान जी आत्मसमर्पण करने आते हैं और वे श्रीराम से कहते हैं लंका अयोध्या की अधीनता स्वीकार करती है। आज से लंका की सारी जमीन व राजकोष पर सिर्फ श्रीराम का ही अधिकार होगा। इस पर श्रीराम कहते हैं कि किसी की जमीन को बलपूर्वक हथियाना धर्म व नीति के विरूद्ध है। इसके आगे वे कहते हैं कि मैनें तो पहले ही श्री विभीषण को लंका का राजा घोषित कर दिया था। इससे हमें यह सीख मिलती है कि बलपूर्वक किसी की जमीन व संपत्ति को हथियाना धर्म व नीति विरूद्ध है।

91. प्राचीन परंपराओं की खिलाफत भी की जा सकती है (Ancient traditions can also be opposed)

जब श्रीराम लक्ष्मण को यह बताते हैं कि सीता को अग्नि द्वार से गुजर कर उनके पास आना होगा। लक्ष्मण को श्रीराम की यह बात पसंद नहीं आती, वे कहते हैं कि ''यह कार्य उचित नहीं है। सीता भाभी मेरी माता के समान है एवं मैं उनके पुत्र समान होने के नाते आपके विरूद्ध विद्रोह भी कर सकता हूँ।'' श्रीराम लक्ष्मण को धैर्य से यह समझाते हैं कि उन्होंने सीता हरण से पहले अग्नि देव को सुरक्षा की दृष्टि से सीता को सौंप दिया था। तुम जिस सीता की बात कर रहे हो वह सीता का प्रतिबिंब मात्र है। तब लक्ष्मण शांत होकर श्रीराम से क्षमा मांगते हैं। इस दृश्य से हमें यह सीखने को मिलता है कि रूढ़ीवादी परंपराओं के निर्वहन के संबंध में स्वविवेक से भी निर्णय लेना चाहिए।

92. पिता का प्रेम बड़े भाग्यशाली को मिलता है (Affection of the father can only be enjoyed by the fortunate ones)

स्व. दशरथ व देवतागण स्वर्ग से अपने पुत्र श्रीराम, लक्ष्मण व माँ सीता से मिलने आते हैं। राजा दशरथ कहते हैं कि राम ! तुम्हारे जैसा पुत्र पाकर मेरे जीवन का उद्धार हो गया है। मुझे देवताओं द्वारा पता चला कि तुम पुरूषोत्तम भगवान हो ! यदि यह सत्य है तो भी मुझे यह वर दो कि मैं तुम्हें पुत्र के रूप में ही प्यार कर सकूं। तब दशरथ जी एक बड़ी अच्छी बात बताते हैं कि ''पुत्र ! तुम्हारे बिना ना तो मुझे यह स्वर्ग अच्छा लगता है और ना ही देवताओं का यह आदर-सत्कार अच्छा लगता है।'' तब श्रीराम कहते हैं ''पिता का प्रेम एक ऐसा दिव्य प्रेम है जो कि बड़े भाग्यवानों को ही मिलता है।'' इससे हमें यह सीख मिलती है कि बच्चों को हमेशा अपने पिता का सम्मान करना चाहिए। ऐसा करने से पिता से उन्हें आलौकिक प्रेम व आशीर्वाद मिलता है।

93. राम धर्म की पराकाष्ठा हैं (Ram is the apogee of rightousness)

जब दशरथ श्रीराम से इच्छानुसार वर मांगने को कहते हैं, तब वह कहते हैं कि ''मेरे मन में आपके अंतिम दर्शन की इच्छा थी जो पूर्ण हो गई।'' तब राजा दशरथ श्रीराम से कहते हैं कि पिता से मांगने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए। तब श्रीराम कहते हैं कि आपने अंत समय पर मेरी माँ कैकेयी का त्याग कर दिया था। मेरी आपसे अंतिम इच्छा यही है कि आप अपना दिया हुआ वह श्राप वापस ले लीजिये। मेरी माता को श्राप मुक्त कर दीजिये। यदि मैं अपनी माता को श्राप मुक्त नहीं करा पाया तो मेरा जीवन व्यर्थ हो जायेगा। तब राजा दशरथ कहते हैं कि ''हे राम ! तुम धर्म की सीमा हो और मर्यादा कि पराकाष्ठा हो। मुझे कैकेयी व भरत पर अब क्रोध नहीं है।'' इसके पश्चात् वो कैकेयी माता को श्राप मुक्त कर देते हैं। इससे हमें यह सीख मिलती है कि बच्चों को हर परिस्थिति अपनी माँ का सम्मान करना चाहिए। गुरूकुल में गुरू वशिष्ठ द्वारा बाल्यकाल में उन्हें यह शिक्षा भली-भाँति दी गई थी कि 'मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः'। इस शिक्षा को राम ने जीवन में चरितार्थ किया।

94. भाईयों का प्रेम (Love of the siblings)

श्रीराम वनवास से लौटकर भरत से मिलते हैं और वह भरत से कहते हैं ''तीनों लोक में अगर कोई धर्म का प्रमाण देगा तो वह मेरे भाई भरत का होगा।'' वे यह भी कहते हैं कि ''मैंने तो 14 वर्ष वन में बिताये, पिता की आज्ञा के कारण। परंतु तुमने मेरे भाई अपनी भावना और भ्रातृत्व प्रेम के कारण राजधानी के बीच रहकर भी सन्यासी की तरह बिताये।'' इसके बाद जब लक्ष्मण अपनी माता सुमित्रा के चरण स्पर्श करने जाते हैं तब रानी सुमित्रा कहती हैं कि यदि भरत धर्म का प्रमाण है तो लक्ष्मण तुम युगों-युगों तक बड़े भाई के प्रेम व सेवा का प्रमाण रहोगे। इससे हमें यह सीख मिलती है कि परिवार में सभी भाईयों के बीच भ्रातृत्व प्रेम होना चाहिए तथा सभी को एक-दूसरे के गुणों का सम्मान करना चाहिए। सभी को यह समझना चाहिए कि प्रेम व भावनाएं सर्वोपरि है।

95. सारांश (Conclusion):

भगवान शिव ने रामायण पार्वती को सुनाई। इस वार्तालाप में कागभुशुंडि ने पक्षियों की सभा में गरूड़ को यह कथा सुनाई। याज्ञवल्क्य ने गंगा के तट पर बैठकर भारद्वाज को सुनाई। रामायण में खास बात यह है कि राम का चरित्र एक आदर्श मानव रूप में दिखाया गया है। रामायण मानव को नैतिक उत्थान की राह दिखाती है और मानवता के शाश्वत मूल्यों की छाप छोड़ती है। रामायण देश की सीमा को पार कर सीधे आत्मा को छूती है। धर्म का अर्थ कर्त्तव्य होता है। इस कथा को बार-बार सुनाया व गाया जाता है। महर्षि वाल्मिकी के बाद यह कथा समय-समय पर अलग-अलग भाषाओं में लिखी। तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस को यहां विराम दिया गया। जबकि वाल्मिकी जी की रामायण में लव-कुश प्रसंग भी आते हैं। इससे हमें यह सीख मिलती है कि धर्म का अर्थ कर्त्तव्य है और अधिकारों का अर्थ अधर्म है। उसी तरह आज हमारी कानून व्यवस्था बहुत कुछ मानव के अधिकारों पर टिकी है और इसी कारण अन्याय दिनों दिन बढ़ते जा रहे हैं।

BIYANI
GROUP OF COLLEGES

BIYANI
Where you can trust

Follow us

Accredited 'A' Grade by NAAC

VISION : YOUTH EMPOWERMENT | MISSION : PROFESSIONAL EDUCATION

- **Biyani Girls College**
  (NAAC Accredited) www.biyanicolleges.org
- **Biyani Inst. of Science & Management for Girls**
  (NAAC Accredited) www.bisma.in
- **Biyani Girls B.Ed. College**
  (NAAC Accredited) www.biyanigirlscollege.com
- **Biyani School of Nursing & Paramedical Science for Girls**
  www.biyaninursingcollege.com
- **Biyani Ayurvedic Medical College & Hospital for Girls**
  www.biyaniayurvediccollege.com
- **Biyani College of Science & Mgmt. (Co-Ed.)**
  www.bcsmjaipur.com/edu
- **Biyani Law College (Co-Ed.)**
  www.biyanilawcollege.com
- **Biyani Inst. of Pharmaceutical Sciences (Co-Ed.)**
  www.biyanipharmacycollege.com
- **Jaipur Inst. of Pharmaceutical Sciences (Co-Ed.)**
  www.biyanicolleges.org
- **Biyani Institute of Architecture & Design**
  www.biyanicolleges.org
- **Biyani Private ITI (Co-Ed.)**
  www.biyaniiti.com
- **Biyani Institute of Physical Education (Co-Ed.)**
  www.bcsmjaipur.com
- **Biyani Inst. of Skill Development (Co-Ed.)**
  www.bisd.in
- **Biyani Inst. of Yoga & Naturopathy (Co-Ed.)**
  www.biyanicolleges.org

GURUKPO .COM — No.1 Educational Web Portal in India — www.gurukpo.com

BIYANI tv — बात में दम है... — www.youtube.com/BiyaniTv

बियानी टाइम्स BIYANI TIMES — ...जो देता है पॉजिटीविटी, एनर्जी एंड अपडेट — JAIPUR — www.biyanitimes.com

Radio Selfie 90.8 FM — www.radioselfie.in

BioSeeds — Chaos to Order, Random to Functional — www.bioseeds.jp

Campus 1 : Sector-3, Vidhyadhar Nagar, Jaipur-302039, Rajasthan, India
Campus 2 : Kalwar-Jobner Road, Kalwar, Jaipur-303706, Rajasthan, India
Campus 3 : Champapura, Kalwar Road, Jaipur-303706, Rajasthan, India

Phone : 8696218218, 8290636942
E-mail : acad@biyanicolleges.org
Website : www.biyanicolleges.org

For more information visit our website : www.biyanicolleges.org & fill the enquiry/feedback form